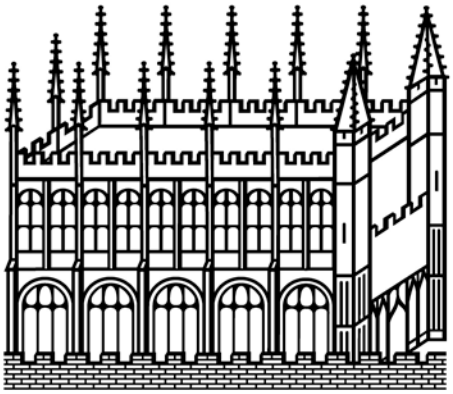


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

100 C 113

13.C.50.

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.

Presented

by

Munshi Newul Kishore.

Ramalfa navaratna.



रमल नौरत्न

رمل نورتن

जिसमें

पासों के बनाने की बिधि और सर्वप्रकार की
शाकलों में सम्पूर्ण प्रश्न भेद सृष्टि का ज्ञान वर्ष
क्रिया पहिले घर से सोलह घर तक के हुक्म
वर्षाचक्र और अनुभूत केरलमत आदि
पद्य में रचित हैं

सम्पूर्ण गणकों के लाभ के लिये

पहली बार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छापा गया

फ़रवरी सन १८८२ ई०

विज्ञप्ति

इसमहीने अर्थात फ़रवरी सन १९०३ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखवा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय कर लें॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
ज्योतिष भाषा	४-चौथे हिस्सामें	र्म्म व मोक्ष धर्म्म ब	रामायण शब्दार्थको
जातक चन्द्रिका	शान्तिपर्व्व दानध-	दान धर्म्म	रामायण का इतिहास
जातकालंकार	र्म्म अश्वमेधशा-	२१-अश्वमेधशा	रामायण मानस दीपिका
देवज्ञा भरण	मवासिक पर्व्व व	श्रमवासिक सुप्रान	रामायण कवितावली
ज्ञान स्वरोदय	मौसल पर्व्व व वा-	पर्व्व महा प्रस्थान	रामायण गीतावली
रमल सार	रा प्रस्थान स्वर्गा	स्वर्गी रोहन	सटीक
दुर्गज्ञान	रोहन पर्व्व हरि व	२२-हरिवंश पर्व्व	विनय पत्रिका बा. मो.
भाषा इतिहास	श पर्व्व	रामायण रामविवाह	विनय पत्रिका बा. शि.
महा भारत	महा भारत पर्व्व	रामायण तुलसीकृत	नाटक
१-पहिले हिस्सा	मूले हदा मौजूद	रामायण सटीक सब	प्रबोध चन्द्रोदय
में आदि पर्व्व सभा	१-आदि पर्व्व	मानस दीपिका कोष	रामाभिषेक
पर्व्व वन पर्व्व	२-सभा पर्व्व	आदि	आनन्द रघुनन्दन
२-दूसरे हिस्सामें	३-वन पर्व्व	तथा जिल्द बंधी	वेदान्त
विराट पर्व्व उद्योग	४-विराट पर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की	योग वाशिष्ठ
पर्व्व भीष्म पर्व्व	५-उद्योग पर्व्व	सचित्र वीर व शेष व	आनन्द लहरी सप्तवर्षिणी
द्रोण पर्व्व	६-भीष्म पर्व्व	रामायण तुलसीकृ-	सौख्य तत्व कौमुदी
३-तीसरे हिस्सामें	७-द्रोण पर्व्व	सातो काण्ड	काव्य
कर्ण पर्व्व शल्य प-	८-कर्ण पर्व्व	२-बालकाण्ड	सूर सागर
र्व्व गदा पर्व्व सौप्ति-	९-शल्य पर्व्व गदा	३-अयोध्याकाण्ड	कबीर सागर
क पर्व्व योषिक प-	पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	३-आरण्य काण्ड	विक्रम सागर
र्व्व विशोक पर्व्व	सह योषिक व वि-	४-किष्किन्धाका	प्रेम सागर
स्त्री पर्व्व शान्ति पर्व्व	शोक व स्त्री पर्व्व	५-सुन्दरकाण्ड	ब्रज विलास बड़ा व छोटा
४ राजधर्म्म मोक्षपद	१०-शान्ति पर्व्व रा-	६-लंकाकाण्ड	कृष्णक्रिया
धर्म्म मोक्ष धर्म्म	जधर्म्म व मोक्षपद ध	७-उत्तर काण्ड	विजय मुक्तावली

विषय	पृष्ठ
गांसे बनाने की क्रिया	५
सोलह शाकलों के नाम और स्वरूप	७
क्रिया जाय चे की	९
सोलह शाकलों की प्रकृति	११
शाली खराड	२६
शाली चक्र	२७
वर्ष क्रिया	२८
साधित करणा	२९
सूक्ष्म वर्ष फल	३०
वज्र चक्र	३१
अब्द चक्र	३१
आशा चक्र	३२
अब्द प्रकृति	३२
शकुन चक्र	३३
प्रथम घरका हुक्म	३४
द्वितीय घरका हुक्म	३४
तृतीय घरका हुक्म	३५
चतुर्थ घरका हुक्म	३६
पञ्चम घरका हुक्म	३७
षष्ठ घरका हुक्म	३९
सप्तम घरका हुक्म	४१
अष्टम घरका हुक्म	४३
नवम घरका हुक्म	४४
दशवें घरका हुक्म	४५
ग्यारहवें घरका हुक्म	४७
बारहवें घरका हुक्म	४८
त्रयोदश चतुर्दश घरका हुक्म	४९
पंद्रहवें और सोलहवें घरका हुक्म	५०
वर्षा चक्र	५१
मुष्टिका प्रश्न	५३
जमीर प्रश्न	५६

विषय	पृष्ठ
नाम काढ़नेकी विधि	५८
नाम निकालने का चक्र	५९
अक्षर निकालने का यंत्र	६१
शकलोंकी संख्या	६४
प्रश्न सम्बन्ध	६७
रोगी अवधि विचार	७१
अवधि विचारयंत्र	७३
गुप्त या नीगड़े हुए धनका प्रश्न	७३
वर्षा यंत्र उदाहरण	७८
त्रयोदशादि षोडश पर्यंत निर्णय वहष्टि चक्र	७९
कूवत यंत्र	८०
नाम संज्ञा	८०
आतपूती आदी आबीरवा की प्रकृत	८२
यमना चार्य्य मत वर्ष क्रिया	८२
अथ केरल प्रश्न	
प्रश्न निर्णय	८४
लाभधातु मूल जीव सुख ज्ञान वधान्य प्रश्न	८५
घबासी प्रश्न	८५
स्थिर व गमागमन निर्णय	८६
सृष्टि वर्षा ज्ञान व धातु ज्ञान	८६
चूवरा ज्ञान व नष्ट [illegible] व चौरजात माह	८७
नष्ट स्थान गत ज्ञान व देवपूजा व कन्या पुत्र प्रश्न व आयु विचार	८८
शत्रु गमागम वस्थापिजावित्त पवृष्टिदिन व गर्भनक्षत्र प्रश्न	८९
स्त्रीलाभ व्यवहार प्रश्न	९०
चौक्त प्रश्न	९०
आराज्य प्राप्ति प्रश्न	९०
अधिकार प्रश्न	९०
ग्राम प्राप्ति व बन्दी मोक्ष प्रश्न	९१
काल निर्णय प्रश्न व केरल चक्र	९१
दिशा शूल देखने का भूलना व दवा औषध की	९२

सूचीपत्र समाप्तम्

लावनी

तरह तरह के प्रश्न इसीमें कोवरातिहै विस्तारा ॥ रमल शास्त्र प्रत्यक्ष कलीमें इसका भेद सबसे न्यारा ॥१॥ एक ग्रंथ यो पढ़के भिन्तर स्यान दाब धूमोसारा ॥ धन दौलत नित संग रहेगा निश्चय तुमजानों प्यारा ॥२॥ बड़े बड़े राजों महराजोंमेंच मत्कार होवे भारा ॥ पढ़ो ग्रंथ यो चित्त लगाके यही वचन सानो म्हारा ॥३॥ जोतू चाहे माल खजाना इसीका पढ़कर ले सहारा ॥ रमल शास्त्र प्रत्यक्ष कलौमें इसका भेद सबसे न्यारा ॥४॥

विज्ञप्ति

दूसमहीने अर्थात फरवरी सन १९२३ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह छपे रवाने के मुहतमित अथवा मालिक के नाम खत भेजकर कीमत का निर्णय कर लें॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
ज्योतिष भाषा	४-चौथे हिस्सामें	धर्म व मोक्ष धर्म्म ब	रामायण अध्यात्मको
जातक चन्द्रिका	शान्ति पर्व्व दान ध-	दान धर्म्म	रामायण का इतिहास
जातक लंकार	र्म्म अश्वमेध शान्ति-	२१-अश्वमेधशा	रामायण मानस दीपिका
देवज्ञ भरण	मवासिक पर्व्व व	श्रमवासिक मुशल	रामायण कवितावली
ज्ञान स्वरोदय	मोसल पर्व्व व महा-	पर्व्व महा प्रस्थान	रामायण गीतावली
रमल सार	प्रस्थान स्वर्गा	स्वर्गी रोहन	सटीक
इन्द्रजाल	रोहन पर्व्व हरि वं	२२-हरिवंश पर्व्व	विनय पत्रिका बा. मो-
भाषा इतिहास	श पर्व्व	रामायण रामविवाह	हिनय पत्रिका बाशि-
महा भारत	महा भारत पर्व्व	रामायण तुलसी कृत	नाटक
१-पहिले हिस्सा	मुख्ले हुदा भी हैं	रामायण सटीक सब	प्रबोध चन्द्रोदय
में आदि पर्व्व सभा	१-आदि पर्व्व	मानस दीपिका कोष	रामसिंघिक
पर्व्व वन पर्व्व	२-सभा पर्व्व	आदि	आनन्द रघुनन्दन
२-दूसरे हिस्सामें	३-वन पर्व्व	नशा जिन्द बंधी	वेसन्त
विराट पर्व्व उद्योग	४-विराट पर्व्व	नशा मोटे अक्षरों की	योग वाशिष्ठ
पर्व्व भीष्म पर्व्व	५-उद्योग पर्व्व	मयतसवीर वस्त्रपर	शान्ता अनवर्षिणी
द्रोण पर्व्व	६-भीष्म पर्व्व	रामायण मुन्नालाल	सारव्य नवलकोमुदी
३-तीसरे हिस्सामें	७-द्रोण पर्व्व	मानो कागज	काव्य
कर्ण पर्व्व शल्य प-	८-कर्ण पर्व्व	२-बालकाण्ड	सूर सागर
र्व्व गदा पर्व्व सौप्ति-	९-शल्य पर्व्व गदा	३-अयोध्याकाण्ड	रत्नाकर सागर
क पर्व्व योषिक प-	पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	३-आरण्य काण्ड	विश्राम सागर
र्व्व विशोक पर्व्व	स्त्री योषिक व वि-	४-किष्किन्धाका	प्रेम सागर
स्त्री पर्व्व शान्ति पर्व्व	शोक व स्त्री पर्व्व	५-सुन्दरकाण्ड	ब्रज विलास बड़ा व छोटा
में राजधर्म्मेआपद	१०-शान्ति पर्व्व रा-	६-लंकाकाण्ड	कृपण शिक्षा
धर्म्म मोक्ष धर्म्म	जधर्म्म वआपद ध	७-उत्तर काण्ड	विजय मुक्तावली

विषय	पृष्ठ
शंसेवनानेकी क्रिया	५
सोलह शाकलोंके नाम और स्वरूप	७
क्रियाजायचे की	८
सोलह शाकलोंकी प्रकृति	११
शाखी खण्ड	२६
शाखी चक्र	२७
वर्षक्रिया	२८
सावित करना	२९
रत्नावर्ष फल	३०
वज्र चक्र	३१
अब्द चक्र	३१
आशा चक्र	३२
अब्द प्रकृति	३२
शकुनचक्र	३३
प्रथम घरकाहुक्म	३४
द्वितीय घरकाहुक्म	३४
तृतीय घरकाहुक्म	३५
चतुर्थ घरकाहुक्म	३६
पञ्चम घरकाहुक्म	३७
षष्ट घरकाहुक्म	३८
सप्तम घरकाहुक्म	४१
अष्टम घरकाहुक्म	४३
नवम घरकाहुक्म	४४
दशवें घरकाहुक्म	४५
ग्यारहवें घरकाहुक्म	४७
बारहवें घरकाहुक्म	४८
त्रयोदश चतुर्दश घरकाहुक्म	४९
पंद्रहवें और सोलहवें घरकाहुक्म	५०
वर्षा चक्र	५२
मुष्टिकाप्रश्न	५३
जमीर प्रश्न	५६

विषय	पृष्ठ
नाम काढ़नेकी विधि	५८
नाम निकालने का चक्र	५९
अक्षर निकालने का यंत्र	६१
श्लोकों की संख्या	६४
प्रश्न सम्बन्ध	६७
रोगी अवधि विचार	७१
अवधि विचार यंत्र	७३
गुप्त या नीगड़े हुए धन का प्रश्न	७३
सर्प यंत्र उदाहरण	७८
त्रयोदशादि षोडश पर्यंत निर्णय वहृष्टि चक्र	७९
कूवत यंत्र	८०
नाम संज्ञा	८०
स्वातपूर्वादि आबीरखाकी प्रकृत	८२
यमना चार्य्य मत वर्ण क्रिया	८२
अथ केरल प्रश्न	
प्रश्न निर्णय	८४
लाभधातु मूल जीव मृत्यु ज्ञान वधान्य प्रश्न	८५
घबासी प्रश्न	८५
स्थिर व गमागमन निर्णय	८६
सृष्टि वर्षा ज्ञान व धातु ज्ञान	८६
मूषण ज्ञान व नष्ट लाभादि [illegible] ज्ञान व चौरजात भाव	८७
नष्ट स्थान गत ज्ञान व देवपूजा व कन्यापुत्र प्रश्न व आयु विचार	८८
शत्रु गमागम वस्त्रापिजावित्तपवृष्टिदिन व गर्भनक्षत्र प्रश्न	८९
स्त्रीलाभ व्यवहार प्रश्न	९०
नौका प्रश्न	९०
जाराज्य यात्रा प्रश्न	९०
अधिकार प्रश्न	९०
ग्राम प्राप्ति व बन्दी मोक्ष प्रश्न	९१
कालनिर्णय प्रश्न व केरल चक्र	९१
दिशा शूल देखने का भूलना व हवा आँवरकी	९२

सूचीपत्र समाप्तम्

लावनी

तरह तरह के प्रश्न इसीमें को वर्णतिहै विस्तारा ॥ रमल शास्त्र प्रत्यक्ष कलीमें इस्का भेद सबसे न्यारा ॥१॥ एक ग्रंथ यो पढ़के मिन्तर म्यान दाव धूमोसारा ॥ धन दौलत नित संग रहेगा निश्चय तुम जानों प्यारा ॥२॥ बड़े बड़े राजों महराजोंमें च-मत्कार होवे भारा ॥ पढ़ो ग्रंथ यो चित्त लगाके यही वचन मानो म्हारा ॥३॥ जो तू चाहे माल खजाना इ-सीका पढ़कर ले सहारा ॥ रमल शास्त्र प्रत्यक्ष क-लौमें इस्का भेद सबसे न्यारा ॥४॥

श्री गणेशाय नमः॥

अथ रमल विषय

ज्योतिषसार चिन्तामणि

लिख्यते

दोहा

लम्बोदर गज मुख सुमिरि भाल चन्द्र एकरन्त
ताचरनन हिरदे धरूं मंगल होय अनन्त १॥
जाकीनों ब्रह्मांड ही अपनी इच्छा पाय।
ताके सुमिरण करतही भवसंकट कटि जाय २॥
आदि रूप जग शक्ति है सकल सृष्टिको भार।
ताहि ध्यान उर धरतही उतरत भवके पार॥३॥
गुरु चरनन हियमें धरूं बारम्बार प्रणाम।
विघ्न हरण मंगल करण पूरण होंय सब काम४॥
जक्त माहिं परकाशहै अबि नाशी है नाम।
ऐसे उस जगदीशको बहु विध करूं प्रणाम५॥

जोकोविद हैं निगमके भाषा के कवि भूप।
गणपति को करि दण्डवत ज्योतिष रचूं अनूप॥
कहा फ़ारसी में रमल पाँसा जिसमें सार।
ज्योतिष चिंतामणिका कहूं विद्या रमल विचार॥
सोलह शकलें ग्रंथमहैं तिनसे वर्णन होय।
हानि लाभ सुख प्रश्नही गुरु गणपति कहैं सोय॥

क्रिया दोहा

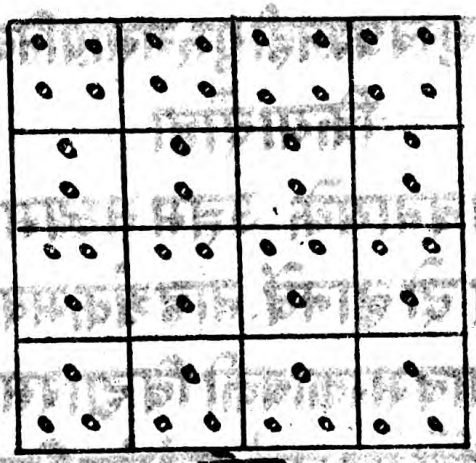
पाँसे दोय बनायके उत्तम मध्यम देख।
अनुस्वार दो छानवें ताह अंक सब लेख॥
कह किताब सरकाबकी विद्या रमल विचार
यमनचार्य्यको मत लहूं कहूं ग्रंथ विस्तार॥

चौपाई

चौकी चार चार कर लीजे॥ बीचमें एक सुवाही दीजे
अनुस्वार चहुं ओरहि देहो। ताको भिन्न २ अब कैहो॥
एकहि ओर वेद नभ दीजे। ताह अदन्त नेत्र गिन लीजे॥
एकहि ओर लोक नभ लाओ। तानीचे इतनेहि बनाओ॥
अंक छानवे सब गिन लीजे। तासों सकल षोड़शहि कीजे
मेष राशि पै जब रवि आवे। धातु सहित पाँसा बन वावे॥
आगे क्रिया सकल उरझावो। षोड़श शकल काढ़ चित भावो

क्रिया जायचे की उरधरहो। नष्ट अरिष्ट ताहीसों करहो॥
चक्र देखि पाँसेहि बनावे। प्रश्न सकल ताही सों गावे॥
याहि समान और एक धरियो ताहि शोध पाँसे दो भरियो॥
सेय संक भरीहीं जब आवे। ताको फलित अधिकही पावे

पाँसेकी क्रिया



दोहा

विघ्न रूप हियमें धरो गुरुको कीजे ध्यान।
बागी देवहि मनायके पाँसे फेंक सुजान १
जग काज कल्याण हित प्रगटो आय स्वरूप।
धनतरकूं उपदेश कियो काढ़ो तुम अँधकूप २
उत्तम मध्यम देखके काज अकाज विचार।
भई शासना ब्रह्मकी ज्योतिष है ये सार ॥३

चौपाई

अँगुरी चारि भूमि पर लाई। अनुस्वार को रूप दिखाई॥

नामनरीकहि पुरुष बताया। मारग औरगोप समझाया॥
याही तुल्य वेद नभ दीजे। भाग देय जमात पुन कीजे॥
मात पिता प्रगटे यामेहीं। चौदह पुत्र धन्वंतर करेहीं॥
तामों सप्तम पुत्र बनावो। पुन कन्याही अवजनवावो॥
एकही शाकल नपुंसक कीजे। ग्रह अरु मास राशि अ-
रीजे॥ अंतहि उत्तर धन्वंतर दीना। तुमहीं आप अनुग्रह कीना॥
जो तुम आपहि मोहि बताया। सो सब रूप हिये निज आ-
या॥ तुम प्रताप हिय माहीं धरो। तमको नष्ट छिनक में क-
रो॥ बुद्धि प्रकाश करो हिय माहीं। जाको संकट काटो जाहीं॥

दोहा

वाह काल नभ में गयो प्रगटाया जो रूप।
धन्वंतर बुद्धि बिचारके षोड़श किये सरूप १४
सरस्वती हिय में धर्यो ब्रह्मा विष्णु महेश।
जगत हेतु विस्तार ची नहीं मोह निज लेश १५

चौपाई

प्रथम तरीक शाकल जो आई। ताहि निकट और एक
साई॥ ताको जरब देवो कबिलोई। नाम जमात को
हो तुम सोई॥ त्रिय सुख चार रेख जहँ देखो।
नाम जमात कवीश्वर पेखो॥ मात पिता तब प्रगटे आई।

ताहू चतुर्दश संतन पाई ॥ त्रिय सुख सकल रेखतु-
सजानों। और ऊर्द्ध सुखही नहिं मानों॥ एक रेख जमात
की कीजे। लोक दंड तरीक कू दीजे॥ ⁝ उतवेतुल दा-
रिवल संज्ञा होई। आही नाम कहै सब कोई॥ उत वेतुल
दारिवल तरीक मिलाओ ⁝⁝ जरबदेय लहिया नहिं पाओ ⁝
एक व्योम तरीक का लेहो। त्रिय मुख रेख जमात पुन देहो॥ उत
वेतुल दारिवल भूराशि लीजे। पुन लहियान इंदु एक दीजे ⁝⁝

दोहा।

नक्की कू लख दया कह सब कवि आप बखान।
जमात रेख एक लीजिये उत वेतुल दारिवल मान १६

रेख एक लहियान की और नक्की की लेह ।
हुमरा नाम हि सबकहै सप्तम पुन चित देह॥ १७॥

चौपाई

नेत्र रेख जमात की लेहो। उत वेतुल दारिवल चंद मि-
लेहो॥ पुन हुमरे की रेख लगाओ। ब्याज नाम उसी
का पाओ ⁝⁝ प्रथम रेख हुमरे की दीजे। पुन जमात।
फिर ब्याज की लीजे॥ उत वे तुल दारिवल कातमवो।
नाम इकीस कवीश्वर गावो॥ तरीक और इकीस मि-
लावे। भागदेय उत वे तुल खासज पावे॥ ⁝⁝⁝ लहिया

नहुमरेकूलीजे।जरबदेयनस्र तुलखारजकीजे ⁝ ⁝ ⁝
भागनकीलहियानकूदेहो। नस्र तुल दारिवल नामही
कैहो॥ ⁝ ⁝ ⁝ लहियानैहीब्याजमिलावो कबजुलखारज
शकलजोपावे॥ ⁝ ⁝ ⁝ कबजुलखारजतरीकमिलावे।भा
गसोंकबजुलदारिवलपावे॥ ⁝ ⁝ ⁝ लहियानइकीसकू
लीजे।भागसोंउकलातबकरदीजे॥५॥ ⁝ ⁝ ⁝

दोहा

उतबेतुलखारजलहियानका दीजेभाग बनाय
सबकविआयबखानहीं इजतसाहकूपाय१९ ⁝ ⁝ ⁝
तरीकब्याजमिलावही भागकरो कबनाय।
फरहानामहिलीनिसे कविजनअतिचितचाय२० ⁝ ⁝ ⁝
सोड़श शकलबनायके धन्वंतर कियाविचार।
निजनिजगृह निश्चयकिये वाहकरोविस्तार २०॥
राशि ईशउनके कहूं मासदिवस पहचान।
शकलपकाति बखानहूं प्रश्न प्रगटहीमान२१॥

सोलह शकलोंके नाम और स्वरूपआदि

स.	क.	क.	त.	फ.	उ.	इ.	ह.	व्या.	न.	न.	उ.	न.	उ.	इ.	त.
⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝
त.	ध.	म.	मु.	मु.	म.	जा.	स्व.	ध.	क.	व्या.	व्य.	न.	च	सी	यो.
⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝

चौपाई

निजनिज भवन कहूं चित लाई। निज घर बैठ महा बलपाई॥ लैहीयान भवन तन जानो। कबजुल दारिव लभन घर मानो॥ कबजुल खारज सहजही लेहो। शाकलजमात सुहृद घर देहो॥ सुत घर फरहा का बल लीजे॥ शत्रु भवन उकला को दीजे॥ जाया भवन कहेई कीसा। और मृत्यु घर हमरा दीसा॥ धर्म भवन में ब्याज लगावो। नख तुल खारज राजहि पावो॥ नख तुल दारवल आयु घर दीजै। उत बेतुल खारज व्यय में लीजै॥ चयो दशम भवन नको पहिचानो। चौदहवां घर उतबेतुल जानो॥ तिथ घर ईजत माकूं लीजे। षोड़श भवन तरीकहि दीजे॥ या घर शाकल जान बल बाना। और भवन में छीन नदाना॥ ५॥

दोहा

किये भवन सुरका बने निज निज दिये दैराय।
याके यह हिय में धरो कोविद कवि समुदाय २२॥
याही यंत्र बिचार के निज घर बैठे आय।
पैजबांध फल भाय हो वृथा कबहू नहिं जाय २३
प्रथम भवन लहियान ले षोड़श लों परयंत।

(निश्चय)

निरवत्र भवनादि कीजिये शिवआपननिरवंत२४

चौपाई

अग्नि बात वारी अरु धरणी। ये पंचकृती कवि कोविदवरणी॥ तुकता प्रथम अगिनका मानो। दूजे बात। कवीश्वर जानो॥ तीजे बारि लीजिये भाई। चौथे भूम कवीश्वर गाई॥ जोजो प्रकृति तत्वकी देखो। वहि फल आप कवीश्वर पेखो॥ जहांसे तुकता चालेवाई। तबहीं टीक लीजिये भाई॥ दोनोंको कवि भाग लगावे। शकवलिकाल प्रश्न बतलावे॥ पुनः जायचा समझो हितसे। क्रियाविचार गरिवयो चितसे॥ यासों फलभायो कवि लोई। ताहे प्रगट मनोरथ होई॥६॥

अथक्रियाजायचे की

लिख्यते

दोहा

ॐ होय अस्नान कर हिये सरस्वति ध्यान।
पाँसेफेंको समझके षोड़शरूप वखान॥२५॥

चौपाई

शून्य शून्य जो समझ देखवो। कविता आप रेखवत देखवो॥ जोनभ भूमि पड़े कब लोई। तो तुम शून्य भरो

द्वितियजोई॥ दोनोंपाँसे देहु मिलाई। एकइरेखजहांलों आई॥ प्रथम शाकलकाउर्द्ध लगावो। पुनद्वितियेका नीचे पावो॥ तीजे लोक शाकल कालेहो। चौथेवेद शाकलका देहो॥ याहिप्रकार पंचम करलीजे। षष्टमसप्तम अष्टम कीजे॥ प्रथमद्वितीय कुभाग लगावे। तानीचेहि नवम घर पावे॥ वेदलोककू जरब जोदीजे। तानीचेहि दशम पुनकीजे॥ पंचम षष्टम भागलगावो। ताहि अश्वस्त एकदशा पावो॥ सप्त अष्टभागहि करदीजे। तानीचे द्वादशा करलीजे॥ नवम दशम को भागलगावो। तेरह शाकल महा शुभ पावो॥ द्वादशा और एकादशा लीजो। सकल चतुर्दशा नीचे कीजो॥ त्रयोदशा और चतुर्दशा लेहो। शाकल पंद्रवीं तासों कहवो॥ तिथि अरु प्रथम को भागलगावे। शाकलसो लवीं तासों पावे। याहिक्रियासों जायचा कीजे। सुरव मुष्टक तुरताहि कहि दीजे॥ शुभ वा अशुभ प्रश्न बतलावे। जा घर प्रश्न सोई फल पावे॥ नेष्ट श्रेष्ट शाकल जो होई। वा सम कहो न राखो गोई॥७॥

इतिश्री कवि गणपति शिष्य धीरज गिरविरचितायांरमल विषय ज्योतिश्चिंतामणिप्रथम प्रभायांश॥

अथ षोड़शा शकल प्रकृति

लिख्यते

चौपाई

॥ लहियान शकल प्रथम हीं सुनिये। जाको ईश बृहस्पति गिनिये॥ शीलस्वभाव पुरुष फल देई। उ-ग्रा प्रकृति राशि अन लेई॥ दूजी राशि मीन पहि। चानों बार बृहस्पति कवि तुम जानों॥ शशि रमजान उदय जब होई॥ लै हीयान मास जो सोई॥ ८॥

दोहा

बलावान चित कहतहै दिशा पूर्व पहिचान
ऐश्वरु फै दोवर्णिले कवितू आपबखान २६

चौपाई

॥ कबजुल दारवल शकल बनाओ। शीलस्वभाव स्त्री फल पाओ॥ भूमि प्रकृति यमन गुणागावे। र-विइस राशि सिंह जो पावे॥ दिनकर बार इसी का जानो। कह सुर कवि गुरु बार हि मानो॥ मास जमादुलो बल पावे। दक्खन दिशा प्रश्न बतलावे॥ इस्थिर कारज उस्का पावे। कै औरजै दोवर्णा मिलावे॥ चर इस्थिर संज्ञा दोलेई। तत्व काट इस्का फल कहई॥

♎ कबजुलरवारज नष्ट बतावे। पुरुषस्वभाव पावक हियलावे॥ मेषराशि बाकी अबलेई। मंगलवार पूर्वदिशिदेई॥ नाशका हालजो चाँदबतावे। कबजुलरवारज उरकायावे॥ और अक्षर इसकाही लेहो। और सकार सी मिलकै देहो॥ ८॥

दोहा

यहि प्रकार विचारही दीजे वर्ण मिलाय॥
कविकोविद चितधारके अशनशकलसुखगाय२७

चौपाई

♎ नामजनमात शकल सुनलीजे। बुधहै ईश गुणाहि चित दीजे॥ सबसों नाह मित्रता धारवे। स्त्री रूप रमल कवि भाखे॥ चित्त प्रकृति सौम्य तुमसानो। कन्या राशि दिवस बुध जानो॥ खीलोंवल कामासजो लेई। सक ओर चित इस्थिर लेई॥ दक्षिणा दिशा अंक में लेही। आदिक्षि नाम उरत कहि देही॥ अंकके नाम सोचके लीजे। नामजान शीघ्रहि कहिदीजे॥ ♎ फारहा नाम पुरुष सब कहहीं। बात प्रकृति रमल सब लहहीं॥ शीतलजालस्वभावहि लीजे। मृगुहैईश शुक्रदिन कीजे॥ इयहि लग्न दिशि पश्चिम जानो।

(बाकी)

रवी युसानी मास पिछानो ॥ मार्ग नीत प्रति उरकूक हिये। नैं मोर जो दो वर्ण हि लहिये ॥२१॥

दोहा

÷ उकला कवि कोबीद है खोटा चित्त अति ज्ञान।
भुमि प्रकृति ईशा शनि मकर कुम्भ घर मान २८॥

चौपाई

दिवस शनैश्चर अरु बुध कीजे। शशि रज्जव अरु मा-रग लीजे॥ इस्थिर जय सुभाव जो लहिये। दक्षिण दिशा वात उरकहिये॥ अंक नकार याहि के लाखो। प्र-श्न नाम जब कवि जन गावो॥ चित्र प्रकृति उकला की कैसी। साबित रहै रंक मीजैसी॥ ÷ मन्त्र शकल क-वि कोविद गावै। नाम इनकी मुख काव बतावै॥ नष्ट शकल सब कविहि बतावै। स्त्री रूप ईशा श-नि गावै॥ भुमि मिज़ाज बार शनि लेई। मकर कुम्भ राशि दो व्यई॥ रज्जव इन्दु इसी का जानो। दक्षिण दिशि ग्रह इस्थित मानो॥ वर्ण सकार वकार मिलावो। तासो नाम उसी का पावो॥ जो विधि नभ वाणी मोह आई। सो अब शकल शिष्य मैं गाई॥२१॥

दोहा

= अष्टम हुमरा कहत है कवकोविद चितलाय
नेष्ट पुरय अति चिन्तहै बात प्रकृतहिय पाय२९

चौपाई

भौम ईश मंगल दिन कहिये। मेष राशि पश्चिम दिशि लहिये॥ अवध मास जो बात बतावे। जै अरु कै दो बर्ण मिलावै॥ नवम शाकल व्याज शिय सुनिये। शील स्वभाव इस्त्रि वपु चुनिये॥ वारि प्रकृति ईश राशि जानो। कर्कहि राशि सोम दिन मानो॥ मास सुहरिस को कह दीजे। उत्तर दिशा प्रश्न की लीजे॥ कहकर। बात करे विपरीता। अक्षर देरै लहै विनीता॥ = दशवीं नक्षत्र तुल खारज जानो। शील स्वभाव पुरुष वपु मानो॥ अग्र प्रकृति कहै कवसारे। रवि है ईश कोविद कह भारे॥ आदित्य वार राशि सिंह जानो। और बृहस्पति वी कवि मानो॥ मास सफर पूरब दिशि कहिये। खारज अक्षर देते लहिये॥ = शाकल ग्यारवीं। अबमैं कहहूं। नक्षत्र तुल दारिवल सुन शिशु लहहूं॥ शील स्वभाव इस्त्रि वय जानो। वार प्रकृति मीन घर मानो॥१२॥

दोहा

ईशा बृहस्पति सोम दिन और बृहस्पति मान।
माहनी कादइस्थिर सदन उत्तर रहै सइमान॥३०॥

चौपाई

शकल बार वीं अब तुम सुनिये। उत वेतुल स्वारज नाम जोगिनिये॥ नष्ट शकल कवि पुरुष हि जानो। अय प्रकृति कहै कवि गानो॥ भौम यही मंगल दिन जानो॥ मेष राशि रज्जव शशि मानो॥ दिशा पूर्व कवि कोबिद कहही। कै अरु जेठो अक्षर लहही॥ त्रियो दशा नकी कहै तिवलोई। खोटा चित्त दुश्चित्व पुसोई॥ चित्त प्रकृति जलकी सम मानो। भौम इसे दृष्टि क घ रजानो॥ मंगल वार उत्तर दिशि लहिये। माहर मास ब लो बल कहिये॥ कहै कुछ और कहै बिपरीता। अक्षर ये जो दोय बिनीता॥ चतुर्दश पुत वेतुल दारिवल। जानो। शील स्वभाव स्त्री फल मानो॥ सुम्म प्रकृति ई शम्हगु कहिये। दृष्ट है राशि शुक दिन लहिये॥ रवि लोंबल का मास बतावो। दक्षिण दिशि का बिज घर। यावो॥ वरण विचार नाम कहदीजे। दै अरु से दो अक्ष रलीजे॥ इज़्ज़त माय शकल अब कहहूं। चारण

दिशा घर उस्का लेहूं॥ जानन घुंमक इस्की गाऊं। कही पुरुष कहिं स्त्री पाऊं॥ वायु प्रकृति बुद्धि गुरु जानो॥ मिथुन राशि तुम अरु तुल मानो॥ बुद्ध वार इस्को वी कहिये। रविलों वलका मास जो लहिये॥ पश्चिम दिशि उस्का पहिचानो। बचन सुरसे अक्षर जानो॥ आवे शि शकल ज्ञान उरभरिये। प्रश्नोत्तर तब हीं कुछ कहिये॥१३॥

दोहा

जासों उतपति सब भई सोतरीकको जान।
शीतस्वभाव इश्रीकहैं ईश वंदहिय मान॥३०॥

चौपाई

कर्क राशि जल प्रकृति वखानो। मोहस्मि आप सोम दिनमानो॥ उत्तर दिशा सावित सब कहहीं। से अक्ष रइस का वा लेहीं॥ योडश शकल लक्षण जब आवे। तब वो रंग रूप सब पावे॥ प्रश्न मतरीक को शब्द हि। पाया। नासों योड़श नाम बताया॥ जो ये भेद गुरोंसे पावो। अनभव काल शीघ्र बतलावो॥ मूक प्रश्न। शिष्य प्रश्न मनो कहियो। विद्या सीख विचरते रहियो॥ शकल विचारो अपने मनसे। रूप रंग सब लेहो

जिनसे ॥ एक प्रकार कहा सो सुनिये । जासू प्रश्न नाम अवगिनिये ॥ दूजे भिन्न भिन्न अब कहहूं । जासू यो दृश्य लक्षण लहहूं ॥ गूढ़ रूप मैं प्रथम जनाऊं । तासों गोप प्रश्न बतलाऊं ॥ २५ ॥

इतिश्री कविगणपतिविरचितायां रमलविशेन्योतिषचिंता-
मणिद्वितियो प्रभावो

दोहा

लहियान जो शकल है शीलस्वभाव हि गाव ।
खारज कुछ एक कहतहैं श्रेष्ठ भाव बतलाव ॥ २ ॥

चौपाई

अग्र प्रकृति पूरब दिशि जानो । धातु शकल पीत रंग मानो ॥ अति पवित्र सुखे चित लहिये । रूप अधिक अतिकीरति कहिये ॥ अतिशरीर सुन्दरतन होई । लघु नहिं दीर्घ मध्य वपु सोई ॥ लाँबी शाशि सुंह पैचेहरो । अति बुधवंत विद्या बहु पेखो ॥ जैसे काजी करे कजावा । ऐसे पंचहि कुल पावा ॥ ऊंचे मंदिर बैठे जाई । देवालय या मस्जिद माहीं ॥ भक्ति करे हिय राम विचारे । अरु सौदागरि लाल निहारे ॥ ये लक्षण लहि मानके बीजे । चित्तहि समझ सोह कहिदीजे ॥ ÷ कब

सुन्दरी नारि बहु दूती कहिये। जाके लक्षण चित्त सों लहिये॥ अति सुभरूप माल घर सारै। देन लेन सुखसेवहु मारै॥१५॥

दोहा

सुक्ति होत है सिंधु मे कोविद लोपहि ज्ञान।
सचिव राज्य बहु जानिये जग में अति पतवान३३
इंदी करसों लिखत है बसे जो पुरुष स्त्री थान।
बिन फाय उसको कहैं काजव जरे निदान३४॥

चौपाई

लघु दीरघ नहिं मध्य शरीरा। तरुण अवस्था अति तनधीरा॥ शीतलचार सैंपै छविदेई। गेहूं वर्ण अंगछवि लेई॥ मीठी बाणी अति मुंह बोले। आदरु बंत प्रणाम सहितोले॥ अति प्रसन्नता बोले सबसों। वारे घर कोलगे लबसों॥ ई कबजुलखा रज अबमैं कहहूं। रूपरंग सब उत्तम लहहूं॥ खोटा चित सारंग नहिं चावै। सेवा दृढ़ सुखहि चित्त सावै॥ वेश्या से अति हित चित होई। कुकई बाज गरबहै सोई॥ तस्कर सों अति हित मेरहई। हाथ पाँव कुछ मंडन कहई॥ जैसा मुंह भैया कावहिये। तैसा आनन उत्तम कहिये॥ अरुणा बरण

से नयन बखाने। छोटी पलक कवीश्वर जाने॥ १६॥

दोहा

चौथी शकल जमातहै शिशु समझो चित लाय
अति हि प्रतिष्ठा वानहै कोविद कहे सराय३५
अति आदर सों बैठना ज्योतिष विद्या धार।
सेवा की सौदागरी पाषाणाकार निहार३६॥
बहु विधि बुद्धि बिचारिके विद्याकार स्वधाम।
वैद्यक गुणा हिय में बसै चतुराई सों काम३७॥

चौपाई

पीत वर्णा अरु तुल सुख कहिये। दीरघ नाड़ कवीश्वर गहिये॥ मीठी बाणी आनन भारी। या विधि स्मृत शकल विचारी॥ ÷ शकल पांचवीं फरहा जानो। यमन वंश घर ब्याता मानो॥ अति हित प्रीति करे चित लाई। फल शूलाय घर राखे आई॥ सुख से रहे सदा वेड़ काला। जीव जनन शिर मौल विशाला॥ लघु मंदिर सुन्दर अति रावे। चिह्न गरब पतलातन भावे॥ पतला अरु उर्द्ध का होई। मंद मुस्कान कहे कवि लोई॥ हल्के ताहि रंग अंग का लहिये। पंचम शकल फराजो कहिये॥ ÷ षष्ठम उकला शकल जतावे। यमन वार्ड

को सम्मत गावे ॥ नष्टहै शाकल कहै कवि लोई। सु-
दा ब्याधमें वोजन होई ॥ १७ ॥

दोहा

जेती खान जोगीपहै निर्बलरहत शरीर ॥ ॥
औरै गढ़पति जानिये सदन कंद अतिभीरउ च।
सदनरसोई कालहै नित प्रति भोजन होय
बंद्दि वानलसरा कहो कछु लघु जानियजोय२८

चौपाई

रागश्रीतलाके सुखजावे। भारीजरवम अंगमेंमा-
ने ॥ नयन विशाल मधुर कटि होई। पतला उदर क-
हे कवि लोई ॥ ॥ सप्तम शाकल इकीसबरवान्ह।
तासोंप्रश्नभेदमैं जान्ह ॥ नष्टहि कर्म करे चितलाई।
सबकायो शिरमौरहै भाई ॥ यसन हीन कोहै अधि
कारी। और हीन सोंराखे यारी ॥ अपने धर्मकी लघु
तासाने। और हीनसोंनिसचितमाने ॥ इस्त्री रहित।
सबी कविगावे। रंगसपेद धातु बतलावे ॥ शरवि ग-
ई हमेशाघरही। हाथ पाँव कुछ खराउन करही ॥
श्याम तत्व का रंग बखाने। चरणानबीच घाव कु-
छ जाने ॥ यसन पुरुष की कदर जोहोई। तामेंनित्य

बैठे सोई ॥१८॥ दोहा

अधरंगहोय शरीर में मुँह टेढ़ा कुछ जान।
रंगाकहो बदरंगासा इक्किस रूप बखान॥४०॥
अष्टम हुमरा नामहै नष्ट रूप वह पेख ॥
गुनेहगारहै राजका खोटेकर्महि देख॥४१॥

चौपाई

रुधिररूप लब्धकपुनिकहिये। सदनाकीनोजात।
जोलहिये॥ छोरकर्मका करताजानों। बिस्फोटक।
कावैद्यपहिचानो॥ तस्कर अरुहिंसा करेकोई।
तासों प्रीति हेतु से होई॥ बारम्बारहि नेत्र फिरावे।
सब्बरातन सब कविजनगावे॥ पतलीनाड़ शीश
अतिभारी। मुँहपै घाव कहोकोड़ कारी॥ नेत्र ऊर्द्धया
नीचे होई। छोटो घाव कहै कविकोई॥ खारज
शकल नासकविजानों। शीलस्वभाव श्रेष्ठ अति।
मानों॥ दीनइबादत नितउठ करही। सेवा हित
मारग शिर धरही॥ सोहै बादशाह कवि।
सोई। माल सौदागर कहही सोई॥ मार्ग
नीत उठ उरमें धारवे। और काज सल्लाह के
भारवे॥१८॥

को सुखमत गावे ॥ नष्टहै शाकल कहै कवि लोई। रु-
दा व्याधमें बोजन होई॥ १७॥

दोहा

जेती खान जोगी पहै निर्बल रहत शरीर॥ ॥
औरै गढ़पति जानिये सदन कंद अतिभीर३ च।
सदन रसोई काल है नित प्रति भोजन होय
बंदि वान लखरा कहो कछु लघु जानिय जोय३९

चौपाई

दाग शीतला के सुख जावे। भारी जख्म अंग में मा-
ने॥ नयन विशाल मधुर कटि होई। पतला उदर क-
हे कवि लोई॥ ÷ सप्तम शाकल इकीस बखाना।
तासों प्रश्न भेद मैं जाना॥ नष्टहि कर्म करे चित लाई।
सब काया शिर मौर है भाई॥ यमन दीन को है अधि
कारी। और दीन सों राखे यारी॥ अपने धर्म की लघु
ता माने। और दीन सों नित चित साने॥ इस्त्री रहित।
सबी कवि गावे। रंग सपेद धातु बतलावे॥ राखे ग-
ई हमे शाघरही। हाथ पांव कुछ खराउन करही॥
श्याम तत्व का रंग बखाने। चरणान बीच घाव कु-
छ जाने॥ यमन पुरुष की कदर जो होई। तामें नित्य

बैठे सोई ॥१८॥ दोहा

अक्षर रंग होय शरीर में मुंह टेढ़ा कुछ जान।
रंग काहो बदरंग सा इक्किस रूप बखान॥४०॥
अष्टम हुमरा नाम है नष्ट रूप वह पेख ॥
गुनहगार है राजका खोटे कर्महि देख॥४१॥

चौपाई

स्थिर रूप लब्धक पुनि कहिये। सदना की वो जात। जो लहिये॥ छोर कर्म का करता जानो। बिस्फोटक। का वैद्य पहिचानो॥ तस्कर अरु हिंसा करे कोई। तासों प्रीति हेतु से होई॥ बारम्बार हि नेत्र फिरावे। मक्षरा तन मन कवि जन गावे॥ पतली नाड़ शीश अति भारी। मुंह पै घाव काहो कोढ़ कारी॥ नेत्र ऊर्द्धया नीचे होई। छोटो घाव कहै कवि कोई॥ ३ स्वारज शकल नास कवि जानो। शील स्वभाव श्रेष्ठ अति। मानो॥ दीन इबादत नित उठ करही। सेवा हित मारग शिर धरही॥ सोहै बादशाह कवि। सोई। माल सौदागर कहही सोई॥ मार्ग नीत उठ उरमें राखे। और काज सल्लाह के भाखे॥१९॥

दोहा

करे शिकार जो मीनका कुछ व ननेका काज
लग्न तन सबको कहै चमक श्वेत शुभ साज ४२

चौपाई

लग्न तुल खारज दशवीं जानों। शील स्वभाव श्रेष्ठ बपमानों॥ आपस में सासका दोभारवै॥ तसवी मा-लाउरमें राखे॥ भातु खानका मारग भोगै। अतिहि सुशील राज घर जोगै॥ आठौं पहर पुरुष संग रहही। चितमें गर्व सकल कवि कहही॥ राजकचहरी बैरे जाई। पतली धारा महत कवि गाई॥ भवें बीचमों खाली देखो। ठोड़ी चौड़ी और हि पेखो॥ लाल नेत्र देखे जन। सारे। पीतरंग देखे नरप्यारे॥ यानिधि सकल विचारोजबहीं। प्रश्न स्वरूप कहो तुम तबहीं॥ कहूं। ग्यारवीं शकल बनाऊं। नस तुल दारिवल नाम जनाऊं॥ खोटा चित्त फैल अतिभावै। जल अपवित्रसों अतिचित्त रावै॥ मारग सैर करै अतिहितसे। पुन। बाजार में बैठे चितसे॥ सकल कवीश्वर याहि बतावें। नष्ट शकल सुर काव जतावें॥ २०॥

दोहा

सबसों प्रीतहि वो करे कामकरे छल त्याग।
अतिहि अतिष्ठागरवहीनष्ट कर्म चित लाग४३॥
अतिहु लास चितमेंरहै करे मेल की बात।
भवेरंगगेहूं कहो करे अधिक को साथ॥४४॥

चौपाई

डाढ़ीमुँहपै अतिनर मोहै। जोदेखवै वाका चित मोहै॥ उत्तवेतुलखवारज आगेजानों। द्वादश घर वाका पहिचानों॥ ई रासवे माल सौदागरि काजा। औरहु अश्व रहे घर साजा॥ जपतप ईश्वरको अतिसेवै। शीलस्वभाव श्रेष्ठ बहु मोहै॥ बागबगीचे मन अति लागे। अथवा उसी क्रियामें पागे॥ औरश्वानसों प्रीति बढ़ावै। भारी शब्द अति सुंहको पावै॥ पक्षी सुवेसों अतिहितरासवै। नीचे अधर कदीश्वर ताके॥ जैसे होंठ बड़ के रहहीं। तैसे दुष्टजन के कवि कहहीं॥ दीरघशिरअस्थूल बतावै। ये लक्षरा सलहि कविगावै॥ सूँ अतिखुला कहै कवि लोई। ये लक्षरा सब बहु विधि जोई २१

दोहा

त्रियोदश घरकी शकलहैं नासन की तू जान।

खोदाचित सब कविकहैं वैद्यक विद्यावान४५॥

चौपाई

जो सारंगसों चलिकर आवै। वासों मिलकर अति सुख पावै॥ किसीबंट से भागा कहिये। मधुरा पान उसीकूं लहिये॥ मष्ट कर्म जाने सोकरही। लै अति श्वेत रंगसो भरही॥ बाल शीशपै अधिक विराजै। लाल रंग चरनु कोराजै॥ हेरत हिरदी नयन फिरावै। नाड़ कंद कीसी कविगावै॥ आनिधि शकल विचारो जबहीं। प्रश्न स्वरूप बतावो तबहीं॥ सुनोंचौदवीं शकल बताऊं। उत्तवे तुल दारव ल नाम जताऊं। श्रेष्ठगावसब कबिजन गावैं। सब विधि हर्ष हुलास बतावैं॥ अति बुधवंत कवीश्वर कहही। वैद्यक विद्या उरमें लहही॥ और शस्त्र जो देखन हारा। श्रेष्ठ सुभाव कहै कविसारा॥ २२॥

दोहा

करे परस्पर इस्तरी आपसमें व्यवहार।
चौपाया पक्षी सकल अतिसुशील चितधार४६

भोजन और सुगंधसे अतिवर अम्बर धार।
सदा हरष में चितरहै गृहमें सुन्दर नार॥४७॥

चौपाई

सकलकाज अपने कर करही। अतिचतुराइ हिये में धरही॥ कहूं पंद्रहवीं शकल जताऊं। इक्कत माहै नाम बताऊं॥ ई शीलस्वभाव श्रेष्ठ वपु कहिये। मंत्र। यंत्रविद्या बहुलहिये॥ पक्षी सकल चतुष्पद लहिहो। अतिबुधवंत पसारी कहिहो॥ हठ अवस्था सबकोइ जाने। राजकाज जागीरहि माने॥ अब मैं शकल सोलहवीं कहहूं। लक्षरा जाके चितसों लहहूं॥ ; बलगम सौर मिजाज बतावे। मेवा दक्ष सों अतिहित लावे॥ दीरघ तनु शरद तर कहिये। बादशाह दर्बारी लहिये॥ राजाहेत बसी उपढावे। हर्ष हुलास बस्त्र सुभपावे॥ मार्ग नीति उर भोगे जाई। दीरघ तनु सकल कवि गाई॥२३॥

दोहा

श्रोत्री शिक्षा सुरव कहैं रंगहि श्वेत बखान।
आनन रूप अधिक कहै पतली रंग सो जान॥५८
पाले श्वानन को सदा राखै स्वघर बनाव।
राजसभामें अतिनिपुरा आली अधिक स्वभाव॥५९
योड़शा शकल निहारिकै करियो शिष्य विचार।

प्रश्नरूपअवभायहौं क्रियाके अनुसार ५१॥

इतिश्रीकविगणापतिविरचितायां रमलविद्यायज्योतिषचिंतामणौ

मध्येषोड़शशाकलचक्रंतं

अथशाक्षीस्वराडुलिख्यते

दोहा

तनकीनागअरुविश्वहै धनकीमुनिमनुजान

सहजभवनतियिघरहै सुहृदसोलवींमान ५२

वाणीभवनकीनवमहै यष्ठमकीदिगजान।

सप्तमकीएकादशी अष्टमद्वादशजान ५३।

चौपाई

धर्मभवनकीवाणीहि लीजे। कर्मभवनकीतनघरकी

जे॥ लाभभवनजायाणहिवानों। द्वादशकी अष्टम

घरमानों॥ त्रयोदशकातनघरलीजे। और चतुर्दशी

कासुनिकीजे॥ तिथिघरसहजभवनको देखो। षो-

ड़शघरको धनघरपेखो॥ जाघर प्रश्नशाकलक-

विदेखे। वाघरशाक्षीनिश्चयपेखे॥ नेष्टश्रेष्ठवाही

कूजाने। जैसाहो तैसाप हचाने॥ शाक्षी चक्र।

खंचदिख लाऊं। लिखिकेर अंकसकलगु-

णगाऊं॥२४॥

अथ राशीचक्रम

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
८ १३	७ १४	६ १५	१६	८	१०	११	१२	५	१	७	८	१	७	३	२

दोहा

प्रथमभवनसेदेखियो जीवकुसुखदुखहोय
रवंद्रजोषचारीजिये उत्तरकहियेसोय ५३।
सेत्रभवनसेदेखिये दृब्य सामश्ररुहान।
पैजबांधफलभाखहो क्रियाशाकलउरआन ५४
लोकभवनसेलीजिये कुलजननरवत्तरसोंप्रीत
वेदबारगाहीकोशाकी खत्तरजतावे नीत ५५॥
वेदसदनचित्तधारके कीजेकाज अकाज।
वृगितड़ागजसीनसब भवनग्रामसुखसाज ५६
दारागभवनसेलीजिये कीजेपुत्रविचार।
मित्रकोइहहितकारगो ताकूबीनिरधार ५७।
जादूचोरबिसारही चौथाभवनहोगुलाम।
झगड़ायष्टमभवनसे देखोसुन्दरधाम ५८॥
भवनसातवेंसों कहो गोपपदारथ होय।
तस्करझगड़ा इस्तरी इनकाहैघरसोय ५९॥

अष्टमभवनमोंलीजिये बिरसाकालहि देख।
सूम हबेली ग्राम सब नाही चितमें पेख ६०॥
नवम भवन चित धारिये विद्या स्वप्न बिचार
खबर दूरकी लीजिये कहत कवीश्वर धार ६१॥
दशम भवन मोंलीजिये राज बड़ाई माथ।
बादशाहजो तरुवका जाको सकल सुखसाथ ६२
लाभभवन एकादशौ लीजे शकल बिचार।
द्वादश घरमे हानले चितमेरबू बनिहार ६३॥

चौपाई

त्रयोदश घरहि चितमेंलीजे। लेन देन वाहत।
चितदीजे॥भवन चतुर्दशको तुम देखो। रूपहिवं
तसिन्नतुम पेखो॥भवन पंद्रहवें कूंतुमगावो। रम
ल शकल सम्पूर्णा जतावो॥भवन सोलहवें कूंतु
समानों।मोक्षअमोक्षजीवके मानों॥२५॥

अथ वर्ष क्रियालिख्यते

दोहा

प्रथम जायचा खेंचके मुख्य नाम धर लेय।
द्वादश शाक्त जाहीपड़े मास वोही करदेय ६४
नख्त्रेस विचारले यशा नाम गुरा होय।

आगेसाबितही करे दशा दिवसकहे जोयई५॥

चौपाई

रमलसंक्रमणा जादिन होई। मीत अंशानौ दशाको जोई॥तिसहीकालरमलकूं देखे। नष्ट प्रश्नकु ताही सों पेखे॥२६॥

अथ साबित करणा

चौपाई

मुख्यजायचा प्रथमजो आवे। जाकी चारहिशक-ल बनावे॥ विश्वदिशा अरु रुद्र कवि कहही। या-मेंसक्र नामकविलहही॥याकानाम उन्मत्त कवि क-हही। चारोंशकलप्रथमधरदेही॥ जासोंखेंचजाय-चा कीजे।उन्मत्तस्थान साबित करलीजे॥जईबारमें साबितहोई। खेंचजायचे सबधरदेई॥क्रिया दूस-रेपुनअबकीजे। केन्द्रस्थान शकलअबलीजे॥पूर्व क्रियासोंसाबित करिये। खेंचजायचे बेबीधरिये॥ तृतियेसाबित पुनअबकीजे। विश्वशक्रतिथि सो-ड़शलीजे॥पूर्वदिशासोंसाबित कीजे। पुनपुनउन्म-त्तरूपधरलीजे॥आगेचक्र दशाका धरदो। द्वादश घरताही के करदो॥खराडु तीनजाके कर देई।

शकल अंक करतहं धरदेई॥ प्रथम चक्रकी उम्हत लावो। द्वादश शकल सकल तुमपावो॥२७॥

दोहा

प्रथम शकलके अंकजो रतन खराड मेदेय।
जोसंख्याआवेभवन दशादिवसकरलेय६६॥
प्रथमक्रियाकेजायचे प्रथम खराड में देय।
द्वितिये पुन तृतियेकरो तीनखराड कर लेय६७
प्रथमजायचे कोउम्हत प्रथमभवन में लाव।
चक्रदूसरालीजिये परआदवेद अभाव६८॥
यापांसा कूं जानले वर्ष पत्र करलेय ॥
जोसंख्याहो शकलकी मासदिवसधरदेय६९॥

अथ सूक्ष्म वर्ष फलम

चौपाई

एकबारमें साबित होई। लाभ अधिक सुखपावे सोई॥ मंगलकर्म्म वर्षमें कहही। यज्ञपुराय वह विधिके लहही॥ द्वितिये धनको दृढ बतावे। हर्ष हुलास रमल कविगावे॥ तृतिये यात्रा मों हृद कहिये। तीर्थ देवको दर्शन लहिये॥ चौथे मध्यम शकल कवि गावे। पंचम नष्ट कलेश बतावे॥ जोषष्ठम में साबि-

तहोई। मृत्यु कहेया अति दुख होई॥ चौर अग्र या नि-
श्चय जानो। अब्द मध्य सोलह कवि मानो॥२८॥

अथ वज्र चक्रम

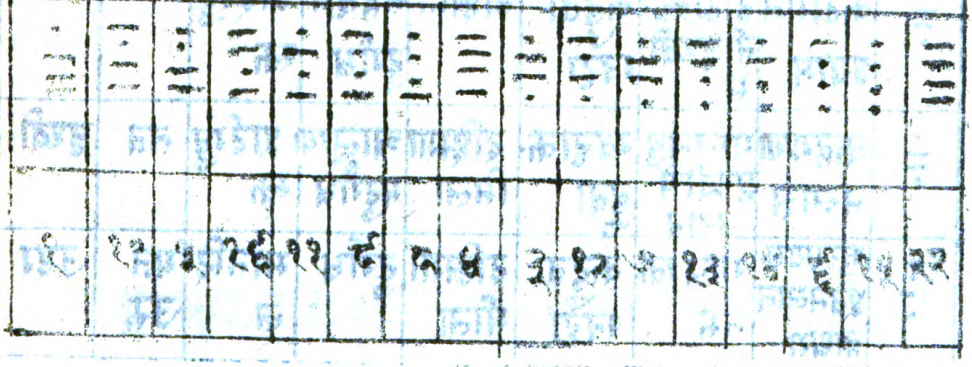


दोहा

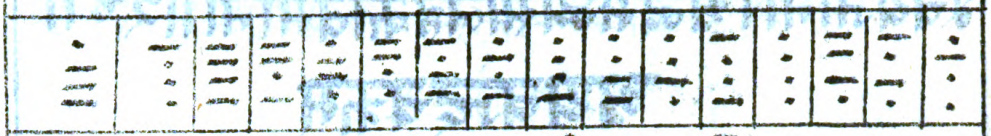
अब्द मास दिन जो कहो काहो याहि विचार।
अदद कहो जो रमलने ताह अंक उरधार ७०॥
जितना अंक निहारिये शकल जान बलवन्त
वर्ष मास और दिन कहो पहर घड़ी बुधवन्त ७१॥

१ २ १ ५ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

अथ अब्द चक्रमालिख्यते



अथ त्राह्मणाचक्रम्



अब्द ब्रह्मति लिख्यते

≡	सुलायम	सावपीत	रदुना	पूर्वतसे	मीठा पूर्व	मिल तसे	त्रफ	सुगंध गर्मखुजा	
≡	कठोरप	लालपीत	खट्टाक-दुवा	पश्चिम	त्रालदु गंध	गर्म	वांस	मुख	
∴	दीर्घपाश गालउस-न	लालपीत	तीयाख ट्टा	पूर्वमीला	संचत्र सुगंध	गर्मखु स्क	ज॰ क॰	कंठ	
∴	सुलायम	श्वेतगो-लमुखक	उड्डजख ट्टामीठा	उत्तर	मिश्राल महत्व	शर्दतर्द गंध	द॰ र॰	कंठ	
÷	कठोर श्वेतपीत	दाढीपा-थाशासे	कडूना खाश	पूर्वमी-ला	खीराक-कड़ी	गर्मखु स्कदुर्गंध	हसे	पूर्व मुख	
∴	सुलायम हराश्याम	मिलाप-श्रिम	श्रनार	मध्यम तर	हत	राहना हाथ			
∴	सुलायम श्याम	दीढीदोनी पहाड़से	तीयाखा राकडुवा	पूर्वत्र तिश्याम	दुर्गंध	गर्मखु स्क	त॰ म॰	बावांह स्त	
≡	कठोरति श्याम	दीढीका-नीपृथ्वी मे	कडुवा खट्टा	दक्षिणा	सहनूत दुर्गंध	शर्दखु स्क			
≡	कहरश्याम मलाल	गोलनघु पृथ्वीमे खान	खट्टाक-डुवा	दक्षिणा मिला	श्रालुश्या मदुर्गंध	शर्दखु स्क	तत	पृथ्वी	
∴	सुलायम श्वेतलाल हाथरा	गालखा नसे	कडुवा खट्टा	दक्षिणा मीला	दुर्गंध	मातदि ल	पत उरु	उदर	

⁝ ⁝	मुलायम पीतश्वेतहरा	म्याने पतला चतुष्पद	मीठा वेष्यद	पश्चिम मिला	बुहारा ताजा	दुर्गंधगर्मतर	कैत	लिंग
⁝ ⁝	जम्मत श्वेतश्या-मामिला	चकोर गोल	मीठातर चिपका	उत्तर	वृक्षादि कनये	अमरूदश्र दीतर	नगतं-गा दार नी	
⁝ ⁝	सकूस्प श्वेत मिला	दीर्घ	मीठा स्वाद नर्म	उत्तर	नवीनवृ क्षादिक	आलूसे-दगंध	म-	जंघा बाँई
⁝ ⁝	मुलायम पीतश्वे-त	दीर्घचं कोर	मीठीच-तुष्यद	पश्चिम मिला	अंगूरसु गंध	गर्मतर	न-	भग
⁝ ⁝	मुलायम नीलहरा	रीठाव-नस्पति आदि	भोजन स्वाद	उत्तरमि-ला	सिक्तस-म	शर्दतर	म-	दराा दाहि नी
⁝ ⁝	मुलायम हरीत	बराबर चकोर लम्बा	स्वानमे रवासकं दपका	दक्षिरा	तरबूज सम	गर्मशर्द सुस्क	अ-	पाव बादौं

अथशाकुनचक्रम

⁝ ⁝	⁝ ⁝	⁝ ⁝	⁝ ⁝	⁝ ⁝	⁝ ⁝	⁝ ⁝	⁝ ⁝	⁝ ⁝	⁝ ⁝	⁝ ⁝	⁝ ⁝	⁝ ⁝	⁝ ⁝	⁝ ⁝
१८	२०	२५	३०	१८	२२	२२	२८	३०	२६	१८	२३	१७	१६	२४	२५

येचक्र पक्षतिचक्रसे पहिले समझनाचाहिये

अथप्रथम घरका हुकुम

लिख्यते

दोहा

लहियान नस्तुल रवारजै पड़ै प्रथम घर आय
नालायेसजबूत है कोविद कहैं मर साय॥७२॥
कबजुलउतवे तुलरवारजै इज्जत माहजो होय।
कामकरे जिसरावको सरंजामसबहोय७३॥

चौपाई

नस्तुल दारिबल प्रथम जो आवे। कार्जविचार देर बोलावे॥ जोई क्रिया प्रथम घरपावे। तो सब कार्जहर कतगावे॥ ÷ फरहा शाकलमहा शुभहोई। कुछ होय कुछ हरकत लोई॥ तरीक न कीजो तन घर देखवै। आधाकाज कवीश्वर पेखवै ≡ व्याजशाकलप्रथमहिं घर आवे। चिंता अधिक देर बोपावे ≡ हुमरा प्रथम। कभीजो आवे। कारज बीच हरकत लावे॥ तनहीभव नका फलमैंपाया। महत कविन ने जोमत गाया२ धी

अथद्वितीय घरका हुकुम

चौपाई

धनघरजो लहिया नहिं आवे। नस्तुल रवारज दूजी

पावे॥धनकी प्राप्ती शीघ्र बतावे। ब्यावी संग उसी के लावे॥ ∴ उतबेतुल खवारजन कीजे होई। फाकाकहै फ़कीरी जोई॥ देश देशमें फिरिके आवे। धनकी लाभ कहीं नहिं पावे॥ ∴ कबजुल दारिवल स्वै घर पावे ∴ उतबेतुल दारिवल जो आवे॥ द्रव्य अधिक सो शीघ्र बतावे। चिंता शोच हिये नहिं लावे॥ इनकी शक्ल जोतन घर देखे। धनकी हानि महा जो पेखे॥ जो कुछ हाथ कहीं से आवे। शत्रु के शाहिं संग लगावे॥ ∴ ∴ फरहान की जो उकलाहोई। आधा माल हाथ लगे सोई॥ ∵ ब्याज शकल या हुमरा लावे। ∵ काहू जन से ऋण धन पावे॥ ३०

दोहा

करे सवाल जो आनके भेजा में एक पास ।
आवेगा लेके कछू या छोडूं मन आस ७४॥

इति द्वितीय

अथ तृतिय घर का हुकुम

लिख्यते

दोहा

भाई बन्धु जवाँई का करे प्रश्न जो कोय ।

सहज जो घरमेकविकहो गोयशंक तोहोय ७५

चौपाई

हारिवलनेक तीसरे आवे। काजसकल वो श्रेष्ठ बता-
वे॥ मुनकलीव शाकल जो पेरवै। काजबीत्तवो हर-
कत देरवै॥ नष्ट शाकल जोकविहीं आवे। हरकत क-
रेकेकार्जकोपावे॥ ⁝⁝ ⁝⁝ ⁝⁝ ⁝⁝ जोये शाकल
तीसरे आवे। भाईबन्धु खुशीमे पावे॥ करेसवाल
स्वप्न काकोई। नेक शाकलमे नेक जो होई॥ कवजु-
लखवारज जोकविपेरवे। ⁝⁝ स्वप्ना नष्ट पुरुष वो।
देखे॥३१॥

इतिद्वितीय

अथचतुर्थ घरकाहुकुम

विरच्यते

दोहा

मिलकदागजो लेनकूं पूंछे तुमसे आय ।
दूजेकहे मकानकूं तोकहियेसमझाय ७६

चौपाई

⁝⁝ ⁝⁝ जोये शाकल सुहृद घर आवे। तालो नेक उसी
कापावे॥ कुछ एक कहो नुकसान उसीका। अंत-

हिहोय घरमासम खुशीका॥ ⁝ ⁝ ⁝ ⁝ जोये शकल चौ
थे घर देखे। खोटा फल नहिं उसीका पेखे॥ सौदा कभीव
नेन नहिं भाई। वहां तो रहै बिमारी पाई॥ ⁝ ⁝ ⁝ चौथे
शकल कभी ये पावे। बाग़ हवेली से सुख पावे॥ मंग
ल काज नेक जो होई। द्रव्य अन्न की प्राप्ती होई॥ जो
यों कहै खाल आ कोई। हवेली से कुछ फायदा होई॥
⁝ ⁝ जोये शकल चौथे घर होई। तो सौदे में टोटा जो
ई॥ जो सौदा भरने को जाई। तो विकने की सुरत न
गाई॥ ⁝ ⁝ ⁝ जोये शकल चौथे कभी आवे। बाग ह
वेली खुशी बतावे॥ जो सौदा कभी होवे उल्का। तो फि
र जोये शकल सब तिल्का॥ ३२॥

इति चतुर्थ

अथ पंचम घर का हुकुम

लिख्यते

दोहा

करे खाल जो पुत्र का या पुत्री का होय॥
तो फ़ा जो कुछ वस्तु है पुन मास्तक का जोय ७७

चौपाई

⁝ ⁝ ⁝ ⁝ ⁝ ⁝ जोये शकल पांचये आवे। ताले बेटे

के शुभपावे॥ करे ख्वाल मासूक का कोई। प्रीति करेया तोड़े सोई॥ ⁝ ⁝ ⁝ ⁝ जोये शकल पंचम जद। आवे। सोय प्रीति ताहीकी पावे॥ ⁝ ⁝ ⁝ ⁝ पुनये शकल बारा घर देखे। मन में प्रीति कवीश्वर पेखे॥ ⁝ ⁝ ⁝ ⁝ जोये शकल पंचम घरहोई। प्रगटै प्रीति कहो कवि लोई। पूँछे मुलाक़ात को कोई। दारिवलनेक जो पंचम होई॥ नसुत जभी पंचम घर आवे। मुलाक़ात कबहूं नहिं पावे॥ ख़बर गाँव की जो कवि देखे। पंचम नेक दारिवल पेखे। जोसाबित पंचम घर आवे। तौवह ख़बर ख़ुशी की पावे॥ नसुत शकल जो आवे कोई। खोटी ख़बर कहै कवि लोई॥ ख़बर झूँठ या सचकह कोई। ताकी निर्णय पूँछे जोई॥ ⁝ ⁝ ⁝ ⁝ जोये शकल बारा घर आवे। ख़बर सत्यही वाकी पावे॥ दारिवलनेक यही फल देई। ख़ारिज नसुत वियरीत फल देई॥ ३३॥

दोहा

मित्र पै भेजा आदमी वस्तु कछू एक लैन
देगा रवाना देयगा तुमकहिये सुखचैन ७८

चौपाई

दारिवलनेक शकल जहँ आवे। देगा वस्तु कवीश्वर

पावे। पूँछे पुत्र प्रश्न जो कोई। पंचम प्रथम जरब कर।
सोई॥ पुनपंचम सप्तम को कीजे। दारिद्र नेक जो पुत्र कह दीजे॥ या भावीत शकल कहिं आवे। फरहा रूप जो आप दिखावे॥ पुत्र होयगा निश्चय कहिये। शोच विचार कछू नहिं लहिये॥ ३४॥

इति पंचम

अथ अष्टम घर का हुकुम लिख्यते

दोहा

कैसे जावे रोग यों कहियो तुम सब नाथ।
कष्ट नाय या जीव ले कहो सकल सब बात ७९॥
अष्टम घर सों देखिये स्वारज नेक जो होय।
रोग जाय शीतावही कहत सकल कवि लोय ८०

चौपाई

दारिद्र नेक जो बैठे आई। स्वारिज नसर शकल या पाई॥ रोग जाय कुछ बिलम लगावे। जीव आराम सुधर पावे॥ सुनक लैव शकल जो आवे। व्याध जाय या दूजे पावे॥ सावित शकल अष्टम में होई। व्याध न जाय महा दुख जोई॥ जो अष्टम में हुमरा आवे

नक्षुत दारिवल अछ न पावै॥ ते रोग न जाय सुनोंक-
बिलोई। मृत्युरूप निश्चय कह दोई॥ यमन चार्य्य ए-
क योंमत गावे। शून्य जायचे के गिन लावे॥ तामेंभा
ग तीन का दीजे। शेष रहैं तो शुभ कह दीजे॥ बचें ती-
न जो अंक हि वामे। विमल लगाय रोग को नासे॥
एकै शून्य बचे कविलोई। वाकी मृत्यु कहो तुम सो-
ई॥ अग्नि बताय शून्य गिन लीजे। शकल जायचे में से
लीजे॥ वारिधरा के पुनि गिन लेवे। शकल जायचे
की व्हांपावे॥ अग्नि बात के ज्याटे आवे। धरा वार के सूक्ष्म
पावे॥ तो रोगी अच्छा होइ जाई। महत कवियों नेयों मत
गाई॥ धरा वार के अधिक जो होई। मृत्यु निशंक कहै क
विलोई॥ यामत को तुम साँचा जानो। महत ग्रंथ का म-
तयों मानो॥ बरदा दासी जो कोइ लेई। ताका प्रश्न कहै
कवितेई॥ दारिवल नेक शकल जो आवे। या मा बीत
नेक घर पावे॥ होय सुबारिक जो कोइ लहई। यामें सं-
शय कछू नहिं कहई॥ दारिवल नसह कभी जो देखे। हो
खरीद पर अशुभहि पेखे॥ खारिज शकल कभी जो।
आवे। सुल्कली वउसमें जो पावे॥ दासी दास खरीदन।
होई। रमल आचार्य्य कहें सब कोई॥ निश्चय व्याख्य।

(करना)

करनजो आवे। ताकूं यष्टमघरसोपावे॥जोयष्टम में हुमरादेखे॥ ≡ छायाघेतउसीकोपेखे॥जोजमातय-ष्टमघरआवे॥ ≡ जादू टोनावाहिबतावे॥औरशक-लकोईद्वांआवे। देहरोगकवीश्वरपावै॥इस्त्रीगर्भ कोनिश्चयकीजे। समझशकलसबमनमेंलीजे॥ ≡ नवतुलवारजयष्टमआवे। दारिवलशकलवहां-हींपावे॥शुक्कलीवशकलजोहोई। इस्थिरगर्भकहैं सबकोई॥इज्जतमाह ≡ ब्याज ≡ कभीआवे। तोभी गर्भइस्थिरहीपावे॥ ≡ ≡ ≡ ≡ ≡ जोयेशकल नवें घरहोई। अथवायेएकादशजोई॥ तौभीगर्भइ-स्थिरही मानों। महतकवीश्वर याकोजानों॥३५॥

इतियष्ट

अथसप्तमघरकाहुकुम

लिख्यते

दोहा

जोविवाहके प्रश्नको पूँछे मनसुखआय।
भवनसातवाँदेखिये कहतकवीसमझाय ८१
दारिवलयासावितशकल वैठे सुनघर आय
हुमराकभीनहोयतो ताकारजशुभपाय ८२॥

चौपाई

तन घर शकल नेक जो आवे। या चौथे घर दारिवल पावे॥ सो अति प्रीति हेत से होई। महत ग्रंथ यें कहैं सब कोई॥ गउ बच्छा का मर्ग विचारै। तो सप्तम घर। योंहीं पुकारै॥ पावक तबै शून्य गिन लीजे। आवी रवा की न्यारे कीजे॥ अनिल अग्नि शून्य जब आवे। तो जीव त घच्छ तहि बतावे॥ आवी रवा की अधिक जो होई। निश्चय मरे कहैं कवि लोई॥ तो साझे को पूँछे कोई॥ सुन घर देख कहैं कवि लोई॥ सावित नेक दारिवल या होई। साझा होय नफे का सोई॥ तेस शकल कोई य हँ आवे। दारिवल रवारिज कोई पावे॥ सुन कलीव श कल जो होई। तौवी नष्ट कहैं कवि लोई॥ जो कहै आ जजाउं एक पासा। करे प्रीति या होय निरासा॥ ते स प्तम अष्टम घर देखे। नेक शकल आवे सुभ पेखे॥ जो दूजे घर नेक हि पावे। अष्टम नेक शकल जो धावे॥ जाहर करे प्रीति वह तेरी। देना कछु न करे कवि हेरी॥ सुन घर नेक शकल जो आवे। अष्ट श्रेष्ट कोई जो पावे॥ प्रीति करे नुकसान जो पावे। महत कवीश्वर यों मत गावे॥ जो कछु लेश किसी पै जाई। द्वितिय नेक दारिवल

जोपाई।। खारिज नेक अष्ट जो आवे। जो माँगे सोई वो पावे।। जोकभीद्वितिये खारिज होई। अष्टम खारिज पुनि जोजोई।। तोकुछ देय नहीं सुन मीता। हारा आवे जाय जोजीता।। सुनकलीव शकल जहं आवे। खारिजकी आज्ञा वोपावे।। साबित शकल जहां तुम देखो। खारिज नेक उसीको पेखो।। ३६।।

इतिसप्तम

अथ अष्टम घरका हुकुम

लिख्यते

चौपाई

अष्टम खारिज नेक जो आवे। तोडर कहै महा दुख पावे।। जोकोइ पूँछे यमडर होई। याका कहो मरिगा मजोसोई।। जोखारिज व्हां नाशहि देखो। आनँद मूर्ति कहींनहिं पेखो।। खारिज नख साबित जो होई। वह दुख कहै महा दुख जोई।। मरणो तुल्य देहको जानो। महत कवियोंकथ्योंमत मानो।। ३७।।

दोहा

जोकोइ पूँछे आयके याकी मृत्यु जो होय
सोकहियो योंमहिं मरे जो पूँछूहूं सोय।। ८३।।

चौपाई

अष्टमचौथिनकीजो होई। यासाबित दारिद्र हो सोई॥ कहो मृत्यु नहिंहोगी भाई। वितकी चिंता दूर कराई॥ खारिज नवसाबितजो होई। चौथेही घरमें कविलोई॥ अष्टमदारिद्र नेकजो होई। तो मृत्युहि निश्चय कहदोई॥३७॥

इतिअष्टम

अथ नवमघरका हुकुम

लिख्यते

दोहा

यात्रा को पूंछे कोई नवें जो घर में देख।
चौथे नवें जो खाजे हो मारग निश्चय पेख ८५
दारिद्र नवें जो दिखये मारग खपना होय।
सुनकलीव मनहीचले घटना चलना होय ८५

चौपाई

चौथे नवें सुनकलिव होई। या चौथे खारिज कहि जोई॥ अर्ध मार्ग सोफिर करआवे। ऐसा कोई कारण पावे॥ खारिज नवें मध्यजो होई। मारग वाकूं कभी न जोई॥ ≡ धर्म वेद घर कभी यों आवे। जरवसी होय

संकट अतिपावे॥ ६ जोहराकभी नवें जो होई। निश्चय फाँसी दगाकी जोई॥ जोकोइ पूँछे विद्या आवन। धर्म जो घरवाको है पावन॥ जोदारिद्र सुभ शाकल। जोदेखे। विद्या बहुत उसी को पेखे॥ स्वारिज नेक कभी जो आवे। विद्या पढ़त नहीं मन लावे॥ साबित नष्ट दारिद्र कभी आवे। श्रम अतिहोय विद्या पर पावे॥ स्वपन परीक्षा जो कोइ कहही। नवें भवन से वाको लहही॥ श्रेष्ट शाकल कोई जो होई। अच्छा स्वप्न कहे कवि सोई। नष्ट शाकल कोई जो आवे। खोटा वाको रूप बतावे॥३६॥

इति नवम घर फल

अथ दशवें घरका हुकुम

लिख्यते

दोहा

बादशाह अरु राजका करे कोई रुजगार।
वाको दिग घर से कहो येमत ग्रंथ विचार॥८६॥
दारिद्र नेक आवे कभी दशवें घर में आय।
कार होयगा शीघ्रही परिउत देहु बताय॥८७॥

चौपाई

अष्टमचौथिनकीजोहोई। यासाबित दारिवल होसोई॥कहोमृत्युनहिंहोगीभाई। वितकीचिंता दूर कराई॥ खारिजनस्समावितजोहोई। चौथेही घरमें कविलोई॥अष्टमदारिवलनेकजोहोई।तोमृत्युहि निश्चय कहदोई॥३७॥

इतिअष्टम

अथनवमघरकाहुकुम

लिख्यते

दोहा

यात्राको हूंढे कोई नवें जो घर में देख ।
चौथे नवें जो खाज हो मारगनिश्चय पेख ८५
दारिवल नवें जोदेखिये मारगस्वपनाहोय ।
सुनकलीवसनहीचले घटना चलनाहोय ८५

चौपाई

चौथे नवें सुनकालिवहोई। याचौथेखारिज कहिजोई॥अर्ध मार्ग सोफिर घर आवे। ऐसाकोई कारण पावे॥खारिजनवें मंडेजोहोई।मारगवाकूं कभी न जोई॥ ≡ धर्मवेदघर कभीयोंआवे। जरवसी होय

संकट अतिपावे॥ ≡ जोहराकभी नवें जो होई। निश्चय फाँसी उगाकी जोई॥ जोकोइ पूँछे विद्या आवन। धर्म जो घरवाको है पावन॥ जोदारिद्र सुभ शाकल। जोदेखे। विद्यावहुत उसीको पेखे॥ स्वारिज नेक कभी जो आवे। विद्या पढ़त नहीं मनलावे॥ साबित नष्ट दारिद्र कभी आवे। श्रम अतिहोय विद्या पर पावे॥ स्वपन परीक्षा जो कोइ कहही। नवें भवन से वाको लहही॥ श्रेष्ठ शाकल कोई जो होई। अच्छा स्वप्न कहे कवि सोई। नष्ट शाकल कोई जो आवे। खोटा वाको रूप बतावे॥३६॥

इति नवम घर फल

अथ दशवें घर का हुकुम

लिख्यते

दोहा

बादशाह अरु राजका करे कोई रुजगार।
वाको दिगाघर से कहो येमत ग्रंथ विचार॥८६॥
दारिद्र नेक आवे कभी दशवें घर में आय।
कार होयगा शीघ्रही परिउत देहु बताय॥८७॥

चौपाई

तनघर शकल कभी शुभ पावे। राजा प्रीति वाही सोंलावे॥ खारिज नेक कभी जो होई। कबूलन। करे परस्पर सोई॥ सुन कलीव कभी व्हांपावे। याही समफल उस्का गावे॥ ऐसा भीये शकल बतावे। बेतर्फ हो अपने घर आवे॥ दारिवल्लनेसयारवारजकारी। नहिंरु जगार बड़ाहै भारी॥ कौन दशामें। होयरुजगारा। वासे कहै कवीश्वर भारा॥ ⁝⁝⁝ जोदिग भवन शकल ये आवे। अगनपकृतिसबहि कविगावे॥ पूर्वदिशावाकूं कहिदीजे। बहुत कवियों कायोंमत लीजे॥ ⁝⁝⁝⁝⁝⁝⁝⁝ राजभवन घरबैठीपावे। उत्तर दिशा कवीश्वर गावे॥ जोये शकल वार कइ आवे। पश्चिम दिशा वाकी कवि गावे॥ ⁝⁝⁝⁝ जोदिग भवन शकल ये होई। दक्षिण दिशा कहैं कवि लोई॥ बादशाह होनाकोइ कहही। दिग घरवाकाभी कविलहही॥ ⁝⁝⁝⁝ जोदिग भवन शकलये आवे। निश्चय तरवत शाहका पावे॥ जोताला पूँछे कवि कोई। जोये शकल कहूंसो जोई॥ जोदिग भवन शकल ये आवे। तालेनेक शाह

केपावे। रहै न रहै शाहको पेखे। ⁝ ⁝ येदो शकल दशौं घरदेखे॥ दारिवल नेक विश्व घरहोई। महीपाल कहहीकविलोई॥ बादशाह या राजा कहै। मेहरवान हम पैभीरहै॥ दारिवल नेक शकल कभि आवे। मेहरवान राजाको पावे॥ बादशाह के क्या है मनमें। दारिवल नेए पड़ी किस घरमें॥ बलकी भरी शकल जहँ देखे। दशवें नेक दारिवलही पेखे। बढ़ राजयों निश्चय जानों। श्रेष्ठ कवि न का यह मत मानों॥ पड़ै नेम घर जोये आई। तौतियहष्ट मंत्रि पुनि पाई॥ जो सवाल कोई ये कहै। अधिपगवन या इस्थिररहै॥ ⁝ ⁝ ⁝ ⁝ ⁝ दशवें शकल कभीये आवे। राजाइस्थिर गद्दी पावे॥ ⁝ ⁝ ⁝ ⁝ ⁝ जोये शकल कभी दिग आवे। मानितरहै हरज कुछ लावे॥४०॥

इतिदशम

अथ ग्यारहवें घरका हुकुम

निरव्यत

दोहा

जो पूँछे प्रच्छक कोई मनमें लाभ उम्मेद।
आवे हाथ या नामिले कहो शकल सब भेद ९९

दारिद्वल साबित नेकही लाभ भवन नो होय।
लाभ होय अतिही घना करे मित्रता सोय ८९॥

चौपाई

÷ ÷ ÷ ÷ जोये शाकल ग्यारहवें देखे। तौभी ला-
भ उसीकूं पेखे॥ खारज कोई कभी क्हां आवे। लाभ रू-
पत्वपनेनहिं पावे॥ ५१॥

इतिएकादश

अथ बारहवें घरका हुकुम

लिख्यते

दोहा

करे स्वाल जोशत्रुका मम संगा करे अनीत।
यावो करेगा मित्रता कहो तुम्हीं सब नीत ९०॥
द्वादश घर जो नेसहै करे शत्रुता मीत ॥
दारिद्वल नेक आवे वहीं तो कहिये शुभ नीत ९१

चौपाई

बंद पड़ा राजा के कोई। बंदि छुटे यों कहिये सोई॥
द्वादश ये गृह खारिज आवे। छूटे सहि पर देर लगा-
वे॥ खारिज नेस कभी क्हां होई। मुक्त शीघ्र पुनि कैद
से जोई॥ मुनकल्लीव कबहूं जो देखे। छूटि जाय पुन

कैदकू पेखे॥ मुनकलीव नेमकभी होई। कोड़े बेत। खायगा सोई॥ दारिवल नेक सावित कभी आवे। बंधपड़े वोहभारजोखावे। वंधमध्यमरजावे सोई। रमत्ना चार्य्यमतज्ञ जोकोई। चतुष्यदकू कोई लावे। सौदा हो यातो बनावे॥ दारिवल नेक द्वादशा में होई। आवेहाथ सुवारिक सोई॥ जोकहि नसदारिवल सुमदेखो। आवेहाथ नसुवारिक पेखो॥ ६ जो कमीशकल द्वादशायें होई। खारजनेहसमुन्फलीव। याकोई। हाथ ना आवे सवकवि कहई॥ ५२॥

इतिद्वादशी

अथत्रयोदशा अरु चतुर्दशा घरका हुकुम

लिख्यते

दोहा

नातेनिम्बत जोकहै त्रयोदशा घरपहचान।
दारिवल नेकजोदेखवी इच्छा पूरीजान ८२॥
पावकतल घरकानिकी विम्ब घर आवेसोय।
शीघ्र काजवोहोयगा कहै कवीश्वरजोय ८३॥

चौपाई

जलपृथ्वीकी जोकमि आवे। कारजवीचदेरावो।

लावे।। अश्वस त्रयोदश भाग लगावे। अेष्ट होय।
कारज शुभ पावे।।४३।।

दोहा

करे सवाल जो आयके मुलाकात के हेत ।
चौदह भवन सो कहो कवी अमागा समेत ६४
दारिवल नेक आवे सोई मुलाकात शुभ होय
खारज वैठे जो शकल कसर कुछ कहि जोय ६५

चौपाई

दारिवल नेक वहां पर आवे। कारज वाको मध्य बतावे।। खारज नेस कवीश्वर देखवे। मुलाकात कत हूं ना पेखवे।।४५।।

इति त्रयोदश चतुर्दश

अथ पंद्रहवें और सोलहवें घर का दुकुम

लिख्यते

दोहा

मकसद का घर पंद्रहवां नेक न हंस के देख।
जो नमात आवे कभी दारिवल खारज पेख ६६
तिथि घर के जो माह है महा नष्ट दुख पाय।
खोटा सब कवि कहत हैं ग्रंथ महत समझाय ६७

योड़श घरहैमोक्षका और घरणामहिजान।
मूलप्रश्नयासोंकहै योड़शफलयेमान ८८।

इतियोड़शफलम

चौपाई

बर्षमध्यकेतकजलहोई। पूँछे आयप्रच्छकजोकोई॥ ⚌ ⚎ ⚏ ⚍ पांसाफेंकजायवादेखे। जोयेशकल प्रथम अतिपेखे॥ अतिघनबर्षै कहकविलोई। थोड़ीपड़े तो थोड़ीहोई॥ लहियानेदूजेघरहोई। बर्षैबर्फ कहै कविलोई॥ आधे यंत्रमेघका कैहूं। ताकोलक्षराचितसोंलैहूं। यंत्रलिखूंसों निश्चयजानो। दूजेघरका प्रश्नबखानो॥ जोयहप्रश्नकलधनहिघरहोई। ताकाफलजानोकविलोई॥ ⚌ लहियानेखेती अतिसूकै। कबहुंतलदारिवलजलअतिदूकै॥ ⚎ कबहुंतलखारिजजलअतिहोई। खेतीथोड़ीकहै कविलोई॥ थोड़ामेघजमातबखाने। ⚏ अकराजाज कवीश्वरमाने॥ फरहालक्षसमवारबतावे। ⚍ उकलानिपटयहीकविगावे॥ बर्षाखराड़ कहैइनकीसा। खेतीबहुतनाजबिखबीसा॥ हुमराकमबर्षैकविलोई। ब्याजहोय।

बर्षा अतिसोई। नखुतखारिज बर्षै थोड़ा। नखुत दारिवलजल अति जोड़ा॥ अतिवेखारिज सूक्षम बरसै। होय खुशी पररहता डरसै॥ ः नकीहोयतो जलअतिमाने। खेतीडूबजायकविजाने॥ ः अ-तवेदारिवलदूजीहोई। मेघखेती अतिहो कवि लोई॥ इज्जतमाह नोधनघरऐवे। जलबहुहोय शीत मं-गलेखे। होयतरीक कहैं सबलोगा। राजप्रजा म-बसुखसंयोगा॥ ४५

दोहा

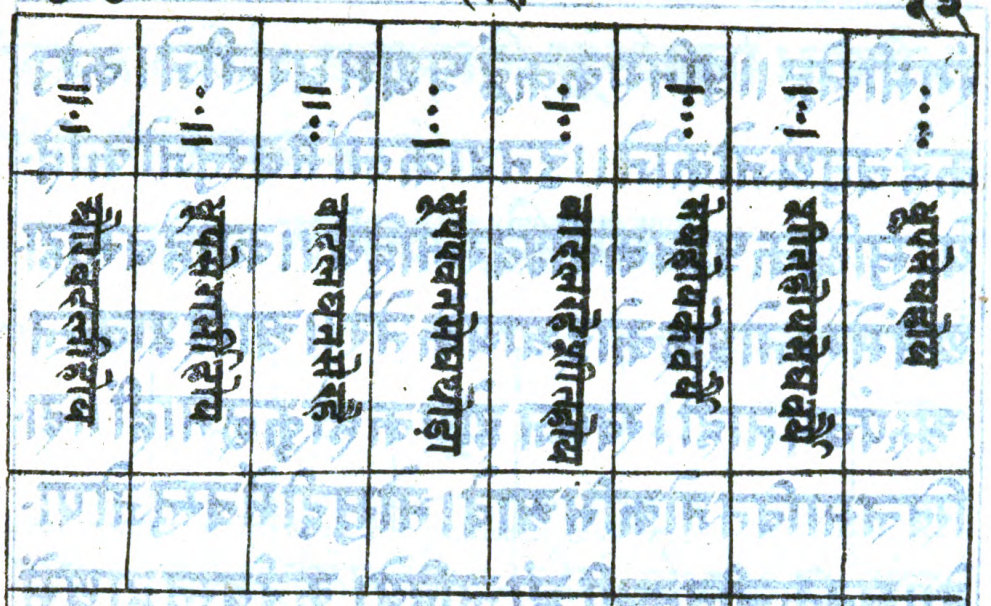
ग्रंथांतरको थोरमत सोमैं लिखूं बनाय।
दूजेघरमेंदेखिये और प्रगट होजाय ४६॥

अथबर्षीचक्र

लिख्यते

उदाहरणा

ः	ः	ः	ः	ः	ः	ः	ः
बर्फ पड़ै वृक्षज-लै	गर्मी ब-हुहोय। फेफिर मेह बर्षै	गर्मी मे-हसे	मेहबर्षै गरमी धू-पपड़ै	धूपथी नैपड़ै	शीतधू-पपड़ै	पवनग-र्मी होय	पवनग-र्मी होय



येचक्रमहावरुनकाहै

अथसृष्टिका प्रश्न

लिख्यते

दोहा

जोकोइपूँछे आयके मुहीबंद महराज ।
मत्लाहमारे हाथमें कौनचीजहै आज १००॥
शक्रवेद घरसेकहो तिनकोसरब लगाय।
धातस्थलयाजीवहो तासोंफलबतलाय १०१

चौपई

चारोंशकल प्रथमजो आवे ।तामेंजो बल बंतहिं।
पावे॥ वाहीशकल रंगकह दीजे। चौरचक्रति।
वाहीमेंकीजे॥ ग्रंथांतरका बीमालेहू। दूजेघरमें

रंगभीलेहू ॥ पुनिएककहूं प्रश्नसघरलीजे। कोउ
कहै चतुर्थजोकीजे॥ इनशाकलोंसेवस्तुजोकहि-
ये। सृष्टिकप्रश्नकवीश्वरलहिये॥ क्याहैवस्तुहा-
थमेंमेरे। जोपूंछेकोइआयकेनेरे॥ आदिशाकल
अरुपंचमनाहीं। खारज होयकहोकुछनाहीं॥ दा-
खिलसाबितजोकभिआवे। सोसुद्दीमेंवस्तुजोपा-
वे॥ पुनकलीवकभी ह्वां लहिये। कईवस्तुहाथमें
कहिये॥ जमीर कहै याहीके फलसे। आगेदेख।
शाकलके बलसे॥ तनसेनर्मकहोकविलोई। ।
औरचकोरसहज घरसोई॥ पंचमघरसेजन्मव-
लाने। अरुमकाहेसोंमइमाने॥ मुनिघरबाकी।
दुश्मन देखे। औरआठवेंसोईपेखे॥ नवसभव-
नसोनैजोपावे। छोटीगोलयारजवबतावे॥ तुक
तेशाकलगिनोंकविलोई। पावकबारीकेसब
जोई॥ औरयहीआवीकेलीजे। जोबलवान सोई
कहदीजे। जोबादीकेजादेआवे। प्रश्नजीवमहलक
विगावे॥ जोआतश के जादेआवे। नामजवाहर
जादे पावे॥ आवीके नरवतेबलवाना। फूल पात
योंकहोनिदाना॥ जोखाकीकेजादे होई। चीजखान

(आत)

धातकवि लोई॥ आगेयंत्र लिखूं सोनानों। रूप द्वीप रंगउसीसे मानों॥४६॥

अथ चक्र लिख्यते

गरद गोल नर्म ज़रद	चकोरहै सुपेदहै	चकोर है रया मरंगहै	चौखुं- दी सनद रंगहै	चौखुं दी रंगसु पेद	लांबा ज़रद रंगहै	चौकों- ण करद रंगहै	गोल गीरा कोमल नर्म
त्रिकोण नर्म सुपेद रंगहै	गोल चकोर नर्म ज़र्द लाल	गोल नर्म त्रिको- ण सुपे- दरंग	गोल गिर्द नर्म सुपेद रंगहै	लम्बा सख्त सुंदर है	गोल गिर्द नर्म सुपेद है	चकोर नर्म आरा कैसा रंगहै	चौखुं दी खुस पेदर गहै

अथजमीर प्रश्नलिख्यते

दोहा

प्रथम शाकलका आतसी दूजेका हो वात ।
तीजेजलका लीजिये चौथे पृथ्वीजात ११२॥

चौपाई

शाकलबनाय कहैं कवि लोई। जैसी प्रकृति सो वैसी होई ॥ जहांजहां बैठेवह जाई। तहां तहां जमीर जोपाई ॥ प्रथमहिं शाकलजहां जो आवे। वा घर। सेजोप्रश्नबतावे॥ लहियानजहां तहां होई। वहां जमीरकहोकविलोई॥ पुनिएकऔरजमीरजो कहिये। उम्हत नुरवतेही गिनलहिये। घरपीछे वो बाँट लगावे। जहांजोठीकजमीरबतावे॥ प्रथम शाकलअरु पंद्रह ताईं। नुक्ते गिनेकवीश्वरपाई॥ द्वादशाकाकविभागलगावे। बाकीरहै सो शाकलहिपावे॥ वाघरसेजमीरकहदीजे। तकरारकरे तोवहभी लीजे॥ पुनिघरतो अरु पंद्रह ताईं। नुक्ते महत कहतकविगाईं॥ वामें नौकाभाग लगावे। रहै शाकल जोप्रश्नबतावे॥ पुनिजमीरएकऔरहि कहिये। नुक्ताचला पंद्रहवां लहिये॥ जहांतीके वासों कह

दीजे। शाकल रंग रूप कहदीजे॥ जहँ पंद्रहवीं शाक-
लजो आवे। वहां सों नुक्ता आप चलावे॥ जहां दिकै व-
हँ सों कहदीजे। शोच समझ कर प्रश्न हि लीजे॥ प्र-
श्न समय में शाकल जो आवे। वाके घरै कौन सी पा-
वे॥ पुनि वाको तकरार जो देखै। ये घर देख प्रश्न क-
विपेखै॥ कहै रमल सो इक्का हि दीजे। शोच समझ
कर अनुभव कीजे॥ ४७॥

दोहा

प्रश्न उमहत आगले दूजे बात मिलाव।
तीजे जलको लीजिये चौथे खाकहि पाव १०३

चौपाई

एक शाकल अब वाकी लावो। कवि या विधि से।
शाकल बनावो॥ दोनों कूं कवि भाग लगावे। शाक-
ल निकल जमीर बतावे॥ पंचम धरा अष्ट जल
कीजे। सप्तम वायु अष्टम आगलीजे॥ एक शाकल
वाकी करलेहो। उमहत सों एक कर देहो॥ दोनों को
कवि भाग लगावे। निकसे सो जमीर बतला-
वे॥ जो ये शाकल कहीं नहिं आवे। ताको प्रश्न
कवीश्वर पावे॥ ४८॥

दोहा

उमदत संज्ञा कहनहै तनधन महजमुहद्द।
सुतशत्रू मुनिनागही नामबनातसमिद्द१०४
बाकी शकलअवतादहै सुनहो कवी सुजान।
महतकवोंकामतयही सत्यहिये करमान१०५

अथनामकाढ़नेकी विधि

लिख्यते

दोहा

शून्यगिनेसब चक्रके षोड़शभागलगाय।
शकलजौनसीपाइये तासोंनामबताय१०६

चौपाई

जो पुनरुक्त कहिंजादेदेखे। वाघरका अक्षरवो पेखे।।कैचितमतएक औरबतावे। महत गुणी सब कविजनपावे।।५९।।

दोहा

नामनवसदिगरुद्धर द्वादशवींकविलेय।
बाघर अक्षरलीजिये नामहोयकहदेय१०७।।

चौपाई

जोयह शकलबली कहिंहोई। तोअक्षरनिश्चय

करजोई।।जो कमजोर शकलकहि आवे। तो अक्षर वाका नहिंपावे।।५०।।

अथनामनिकालनेकाचक्र

लिख्यते

⚌	⚍	⚎	⚌	⚎	⚎	⚍	⚍
अफ	कज	अत	मा	तज	न	शव	जक
⚍	⚎	⚍	⚎	⚎	⚍	⚍	⚎
दत	इत	रुस	जक	पेज	दश	स	अ

दोहा

याहीयंत्रको देखकै अक्षर लेहु निकाल।
शकल जौन बलवन्तजो ताको लीजेहाल१०८।।

चौपाई

चौंकेचित एक ओर बताऊं। अब रमलचार्य्य को गाऊं।।कहें प्रमाण शकलकवि सारे।जो को-

विद ज्योतिष कविभारे ।। प्रथम शकल से योड़शा। ताईं। न्यारे अक्षर सब घरमाईं ।। ताही अक्षर लिखवूं कविलोई। जाके समझ नाम कहो सोई ।। जा घर शकलजानबलवाना। वाघर अक्षर लेय निदाना ।। विद्यारमल गारीगात कीजानो। एक ध्यान कर इसको छानो। गिनते एकचित्त होजावे। पुनि अशुद्ध कसून हिंपावे ।। विद्यारमल अतीयरवीना। पढ़कर किसू। न होय अधीना ।। आगे चक्र लिखवूं चित लावो। अक्षर शुद्ध काढ़ समझावो ।। ५१ ।।

दोहा

चतुराई अरु ज्ञानसे अक्षर लेव निकाल ।
पतही यंत्र विचारके लिखवा शकल हवाल १०६

अक्षरनिकालनेकायंत्र

⚌	⚍	⚎	⚏	☶	☵	☴	☳
अफ	अवे	अजीत	अरा	अहे	अवा	अन	अहे
अवे	अजो	दाल	अहे	अवा	अज्ञे	अहे	अतो
अजी	अरा	अहे	अवा	अज्ञे	अहे	अतो	अये
अरा	अहे	अवा	अज्ञे	अहे	अतो	अपे	अका
अहे	अवा	अज्ञे	अहे	अतो	अपे	अका	अला
अवा	अज्ञे	अहे	अतो	अपे	अका	अला	अमी
अज्ञे	अहे	अतो	अपे	अका	अला	अमी	अनू
अहे	अतो	अपे	अका	अला	अमी	अनू	असी
अतो	अपे	काफ	अला	अमी	अनू	असी	अश्र
अपे	अका	लाम	अमी	अनू	असी	अश्र	अहे
अका	अलाम	मीम	अनू	असी	अश्र	अफे	अरूत
अला	अमीम	नून	असी	अश्र	अफे	असा	अका
अमी	नून	असी	अन	अफे	असा	अका	अरे
अनू	सीन	अन	अफे	अस्क	अका	अरे	असी
असी	अन	अफ़े	अस्क	अका	अरे	असी	अते
अन	अफ़े	अस्क	अका	अरे	असी	अते	असे

यंत्र

۱	۲	۳	۴	۵	۶	۷	۸
अत्तो	अपे	अका	अमा	अलफ	अद्दू	अलीफ	अन
अपे	अका	लाम	नून	मीम	सिन	सिन	अफ
अका	अला	मीम	नून	सिव	अन	अन	साद
अला	असी	नून	अन	सिन	अखे	अफे	काफ
अमा	अद्दू	सिन	अखे	अन	स्वाद	स्वाद	अरे
अद्दू	असी	अन	स्वाद	अफे	काफ	काफ	सीन
असी	अन	अफे	काफ	स्वाद	अरे	अरे	अते
अन	अफ	स्वाद	अरे	काफ	सिन	सिन	असे
अफे	अरव	काफ	सीन	अरे	अते	अते	अखे
अरवा	अका	अरे	अते	सिन	असे	असे	ज्वोल
अका	अरे	सिन	असे	अते	अखे	अखे	ज्वाद
अरे	असी	अते	अखो	असे	ज्वाल	ज्वाल	अज्जो
असी	अते	असे	दाल	अखे	ज्वाद	अज्जो	गान
अते	असे	अखे	ज्वाल	ज्वाल	अज्जो	गान	अलीफ
असे	अखे	जाल	जो	ज्वाल	अमे	अलीफ	अखे
अखे	ज्वल	ज़ाल	गान	असो	अलफ	ज्वाद	अती

दोहा

शाकल अवस्था सबकहूं सो समझो चितलाय
बाल तरुणा याबृद्ध है सबकालिखूं स्वभाय ११०

चौपाई

ः फरहा ः हुमरा ः अतवे दारिवल ः शाकल ः नसुत दारिवल ॥ तरुणा अवस्था याकी जानो । महत ग्रंथका योमत मानो ॥ ः नकी अवस्था बालक कहिये । जाकूं समझ शोचके लहिये ॥ ये मैं शकलें औरबखानूं । ः ः ः ः कबजुल खारिज नमात मैं जानूं ॥ बृद्ध अवस्था इनकी जानो । वाकी मर्घ अवस्था मानो ॥ ५२ ॥

दोहा

वाकी कहूं प्रकृति मैं सब शाकलों की आय ।
स्त्री पुरुष संज्ञा कहूं औरनपुंसक भाय १११ ।

आगे चक्र लिखाहै

अथ शाकलों की संख्याकाचक्र

लिख्यते

۱۱۱	۱۱۰	۱۰۱	۱۰۰	۱۱	۱۰	۱	۰
एकसौ ग्यारह	एकसौ दश	एकसौ एक	एकसौ	ग्यारह	दश	एक	शून्य
۱۰۱	۱۱۰	۱۱۰	۱۰۰	۱۰	۱	۰	۰
एकसौ एक	एकसौ दश	एकसौ दश	एकसौ	दश	एक	शून्य	शून्य
एकसौ एक	एकसौ दश	एकसौ	नब्बे	नब्बे	अस्सी	अस्सी	सत्तर
एकसौ एक	एकसौ दश	एकसौ	नब्बे	नब्बे	अस्सी	अस्सी	सत्तर
एकसौ	नब्बे	नब्बे	अस्सी	अस्सी	सत्तर	सत्तर	साठ
एकसौ	नब्बे	नब्बे	अस्सी	अस्सी	सत्तर	सत्तर	साठ
नब्बे	अस्सी	अस्सी	सत्तर	सत्तर	साठ	साठ	पचास
नब्बे	अस्सी	अस्सी	सत्तर	सत्तर	साठ	साठ	पचास
अस्सी	सत्तर	सत्तर	साठ	साठ	पचास	पचास	चालीस
अस्सी	सत्तर	सत्तर	साठ	साठ	पचास	पचास	चालीस
सत्तर	साठ	साठ	पचास	पचास	चालीस	चालीस	तीस
सत्तर	साठ	साठ	पचास	पचास	चालीस	चालीस	तीस
साठ	पचास	पचास	चालीस	चालीस	तीस	तीस	बीस
साठ	पचास	पचास	चालीस	चालीस	तीस	तीस	बीस
पचास	चालीस	चालीस	तीस	तीस	बीस	बीस	दश
पचास	चालीस	चालीस	तीस	तीस	बीस	बीस	दश
चालीस	तीस	तीस	बीस	बीस	दश	दश	शून्य
चालीस	तीस	तीस	बीस	बीस	दश	दश	शून्य
तीस	बीस	बीस	दश	दश	शून्य	शून्य	शून्य
तीस	बीस	बीस	दश	दश	शून्य	शून्य	शून्य
बीस	दश	दश	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य
बीस	दश	दश	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य
दश	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य
दश	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य
शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य
शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य

दोहा

आगे प्रच्छक जो कहै अवस्था केती होय ।
वर्ष मास दिन हीं कहो समझ पड़े तुम जोय ११२

चौपाई

पांसा गेर आयत्ता कीजे। तुक्के शाकल नफर के दीजे॥ तिनमें षोड़शभाग लगावे। बाकी रहै घर पीछे पावे॥ जहां दिकै वह शाकल बिचारो। जाके अद्दद्देख व

पधारो ।।जेते अद्द राकलके आवें। तेते अब्द अव-
स्थापावें।। कमरे बर्ष अब्द बतलावे।मायल बर्ष मा-
सहियलावे।।जायल अद्दद कहो दिनरैना। महत क-
बोंकायोंहै कहना।।५३।।

दोहा

याबिधि बुद्धि बिचारिकै निश्चय कालजोहोय
हर सुमिरणाहियमेंधरो मुक्तपदारथसोय११३

चक्रम

⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	⁝	सफर क१३
८६	८०	८६	१२	१८	५८	५०	३६	८०	८०	८२		३६	४१	१८	८१	म
४८	४५	४२	३६	४३	४३	४४	४०	३०	८५	३५	५२	४०	६१	३८	८०	पु न म
२८	१२	८२	१८	३०	३०	३०	१५	११	२०	१०		१०	८	३०	१२	व म

दोहा

चोरीको पूँछे कोई छठे जो घरमें देव ।
चोरूपछांसेकहो सप्तमसे धन येव११४।
पुनि पूँछे कोई आयके बीजनो आवे हाथ ।
कहो कृपाकरनाथतुम जासेहोय सनाथ११५

चौपाई

अष्टमद्वितिये शाकल जो आवे। दारिवल नेक क-
सी व्हांपावे॥ तो घरआवे स्वैघरमिंता। किसीबात
की करो नचिंता॥ खाड़िज नसु शाकल व्हांपेखो। बर्य
चोर कवीश्वर देखो॥ जोपूँछे प्रच्छक कब कोई। मा
लधरा या खर्च किय सोई॥ साबित शाकल अष्ट-
म घर आवे। मालसमूचा कवि गुरा पावे॥ जोखा
रिज व्हांपड़े या आई। मालखरच्च उनकिया गुसाँई॥
इसकरके घरकू कवि कहिये। दशवीं शाकल काल
छिन नहिये॥ शाकल ग्यारहवीं को उरआनो। इस।
करकियो साकहियमानो॥ स्वघरमाह चोरकहदेई।
एकहि वार गयोजो लेई॥ चौथे सप्तम दारिवलआ-
वे। वासमयचोरआप घरपावे॥ शाहर मध्य चोरअब
कहहो। याकहींबाहर कूं अबरहहो॥ दशवें चौथे दा-
रिवल आवे। चोर शाहर मेंवार न पावे॥ जोखा रिज।
व्हांशाकल कूं देखवे। चोर शाहर से बाहर पेखवे॥ सप्तम
शाकल करे तकरारा। चोर शाहर में कहो कविभारा॥
चोर पासतें कहो धन आवे। याकहि इसकर खर्च में
लावे॥ द्वितिये अष्टम को कवि देखवे। दारिवल नेक।

श्राकलकूं पेखवे।। तोषन चोर पासते श्रावे। खारिजन-
हसहोसूतलगवांवे।। ५४।।

श्रथ प्रश्नसम्बन्ध का

लिख्यते

दोहा

मिले श्रेष्ट सम्बन्ध सम या कोइ नीचो होय।
कहो बिधी से श्राकलतुम मैपूँछूहूं तोय २१६॥

चौपाई

श्रष्टमनेक श्राकल कोइ श्रावे। दारिवल होय श्रधि-
कफलपावे।। मिले श्रेष्ट सम्बन्ध जो वाकू। श्रति सु-
न्दरवरकहो जोताकू।। खारिज नहस श्राकल कभी
श्रावे। रूपदेखि कुरूप हि पावे।। सुन्कलीव नेहस।
कवि देखवो। वाहि समय फलवाका पेखवो।। सुन्कली
व नेक कवि होई। शीलस्वभाव श्रेष्ट कहो सोई।। खा-
रिज सुन्कलीव कोइ श्रावे। देर बहुत करके वर पावे।।
जो घर धनके कविसब गावे। वो घर इसे प्रश्न में।
लावे।। ५५।।

दोहा

सम्बन्ध मिले ताको नहीं नीके करो बिचार।

अष्टमहितियेदेखकै श्रेष्ट अश्रेष्टविचार११७
खतएक क़ासिदलेगया खबरमिलेयानाहिं।
रीताआवेयाभरा शोचकहोमनमाहिं॥११८॥

चौपाई

वाकूपंचम घरसोंदेखे। दारिवल नेक शकलव्हां।
पेखे॥ लावेखबर साँचकहोभाई। यामेंझूँठकछूभी
नाई॥ ६ इज्जतमाहकसीव्हांआवे। निश्चयखतले
क़ासिदधावे॥ ६ ६ जोया शकलबाँगा घरदेखे।
खबर न उसकीपत्नीपेखे॥ उतवेदारिवलजोकभि आ-
वे। खतकीखबरदेखवो अवलावे॥ ६ जोकभिव्याज
शकलकभिदेखवो। क़ासिद अभीराहसेंपेखवो॥ ६ ६
जोयेशकलबाँगा घर आवे। श्रेष्ट शरीकइसीकोपा-
वे॥ द्वितिये अष्ट करेतकरारा। हुंडीभेजी कहैंकविभा-
रा॥ याकुछधनकीबातबनावे। महत कबोंकायों।
मतपावे॥ जोह्यांव्याजकभीकविपावे। उतवेतुल
खारिजशरकतलावे॥ खोटीबातलिखीकविपावे।
बालकरूपकवीश्वरगावे॥ जैसा होयशरीकउसी
का। क़ासिदरूपहि जातकिसीका॥ खबर झूँठकहु
या सच कोई। ताकीनिर्णयजानेलोई॥ शून्यजायचे

के गिनलावे। शून्यरहै तो सत्य बतावे।। एकरहै तो अ-
सत बतावे। शोच समझ करके समझावे।। ५६।।

दोहा

बसै पुर्ष जो विदेश में पच्छक पूँछे आय ।
मारग में दरियाव है संज्ञा दोष बताय।।११८।।

चौपाई

शकल पथम जो घरमें आवे। पुनि बैठे तकरार जो पा-
वे।। जेते घर पानी के त्यागे। तेती संज्ञा कवि चित पा-
गे।। जो नहिं करे कहीं तकरारी। बैठे भवन उलट हित
कारी।। पानी भवन उलंघे लीजे। संज्ञा करके कवि कह दीजे ५७।।

पांच सात दिन की अवधि

दोहा

पांच सात जो कोस को गया विदेशी मीत ।
कौन समय आवे वही राज दिना कहो नीत १२०

चौपाई

÷ कबजुल दारिवल पंचम होई। याका फल समझो
कवि लोई।। चार घड़ी दिन रहै सो आवे। संध्या तक क-
वि अवधि बतावे।। नस्त तुल रवारिज जो कभि आवे।
÷ पहर रहे दिन चार घड़ी पावे।। ÷ जो कभी फरहा आवे

कांई। नस्तुल खारिज काफलपाई॥ ३ नस्तुलदा-
खिल जो कभि देखो। प्रातसों पहर बढ़े दिन पेखो॥
इज्जतमाह ३ पंचम घरपावे। बुधके दिना किसी समय
आवे॥ ३ जो जमात आवे कविलोई। साँझको एक
पहर लो सोई॥ ३ ख्वाजशकल आवे कविभीता। प्रातसे
एक पहर कर चीता॥ हुमरा शकल कभी कां पावे।
मंगलदिना किसी समय आवे॥ ३ शकल तरीक क-
वीश्वर देखे। दुपहर बाद महत खुशी पेखे॥ ३ जो
उकला पंचम घरपावे। संध्यासे चौघड़ी बितावे॥ ३
जोये शकल आवे इनकीसा। अर्धरात तक कहो मु-
नीसा॥ ३ जो लाहियान शकल कविहोई। प्रातसों
एक पहर लो सोई॥ ३ नस्तुल दाखिल जो कभि आ-
वे। संध्यासों एक पहर बतावे॥ ३ नकी शकल को।
अब कविलोई। चार घड़ी दिनसों सामलो होई॥
३ कबजुल खारिज बैठे आई। प्रात सों एक।
पहर लों गाई॥ ३ उत्त बेतुल खारिज जो आ-
वे। मंगल रात कवीश्वर पावे॥ ३ ३ नस्तु-
लखारिज गया अब आवे। प्रगट में हरज कवी-
श्वरपावे॥५८॥

दोहा

आगे लिखते यंत्रहैं रैन दिना का मीत।
निश्चय करके कवि कहो रमल विषय सो तीत॥२१॥

अथ यंत्र लिख्यते

१	२	३	४	५	६	७	८
⚊	⚋	⚌	⚍	⚎	⚏	⚊	⚋
रवि दिन	दिन शुक्र	दिन बुध	दिन चंद्र	दिन शनि	दिन भौम	दिन भौम	दिन गुरु
रात्रि दिन	रात्रि शनि	रात्रि सूर्य्य	रात्रि शुक्र	रात्रि बुध	रात्रि शनि	रात्रि बुध	रात्रि चंद्र
सू॰ सू॰	शु॰ शु॰	बु॰	चं॰	गु॰	मं	राहु केतु	बु॰

अथ रोगी आवसि विचार लिख्यते

दोहा

प्रश्न कर पूछे आयके रोग कहो कब जाय।
वा कूमि अथवा कहो सहज गुणी समझाय॥२२॥

चौपाई

पहिले दिन फरहा जो आवे। सो दिना का कष्ट व॰

तावे।। ☶ धन घरही लहियानजो आवे। तीनदिना। की अवधि बतावे।। ☵ उतवेतुल दारिवल तीजे होई। रोगजाय छः दिनमेंसोई।। ☳ ब्याजवेद घरजो कभि आवे। दिगदिन अवधि रोगकी पावे।। ☴ पंचम नकी कभीकविदेखवे। तिथदिन आयकवीश्वर पेखवे॥ ☲ अतवे खारिज अष्टम आवे। बिनसतएक अवध। दिनपावे।। जोसप्तममें हुमरादेखवो। ☱ दिन अढाइ-सकविहुम पेखवो।। अष्टम पड़े कभी इन्कीसा। ☰ सा-बितरोग आपतेतीसा॥ ☶ नसतुलखारिज नवमजो आई। दिवसपैंतालिस भोगेभाई॥ ☵ उकलादश-वेंजोकभि आवे। दिवस पचास बैंगादिनपावे॥ ☳ इज्जत माहएकादशहोई। छासठ दिनकी अवधि। है लोई।। ☴ नखतुल दारिवल द्वादशदेखवो।रोज अठ तरकविहुम पेखवो॥ ☲ त्रयोदशा घरतरीक जो आवे। सब्बेश्रीरएकदिन पावे॥ ☱ चतुर्दश कबजुल खारिज होई। इकसत पांच दिवसकवि लोई।। ☰ कबजुल। दारिवल तिथ घर आवे। मतकेऊपर विंशतिपावे ॥ जोजमात षोड़श घरहोई । एकसौ छत्तिस दिवस कविलोई ॥५८॥

दोहा

याप्रकारमेरोगके निश्चयदिनकर लेय।
पांसाफेंकविचारके अवधिशकलकहदेय१२३

अथअवधिविचारणायंत्र

लिख्यते

१	२	६	१०
११	२१	२८	३६
४५	५५	६६	७८
९१	१०५	१२०	१३६

गुप्तयानीगड़ेहुयेधनकामिलनानमिलना

दोहा

द्रव्यगड़ोहैभुम्समें जानतहैंहमनाह ।
प्रगटहोयकोइयत्नसेकहियेअवपरमाह१२४

चौपाई

प्रथम अष्टम ग्रहदोदेखे।दारिवलनेकशकलकां

पेखे।। निश्चय द्रव्य गड़ो है भाई। इसमें झूठ तनक है नाई।। जोखारिज कोई व्हां आवे। द्रव्य स्वरूप कहीं नहिं पावे।। साबित शकल कोई व्हाँ होई। जाका बलवो बिधि से जोई।। सात दृष्ट और से घर देखो। तो व्हां द्रव्य निश्चय कर पेखो।। सुनकलीब कभी व्हां आवे। निश्चय बहुत गड़ा बतलावे।। शकल बिश्व। घर की कबिदेखे। पूरी होय तो द्रव्य व्हां पेखे।। जोउनी व्हां शकल हि आवे। तो नहिं द्रव्य कभी बतलावे।। तृतिये लोक बेद घर देखे। दारिवल होय द्रव्य व्हां पेखे।। खारिज होय नहीं कवि होई। सुनकलीब नीचे कर जोई। द्वितिये अष्टम भाग लगावे। शकल निकाल कवीश्वर पावे। जोवो शकल किसी घर आवे।। तो व्हां द्रव्य गड़ा बतलावे। अष्टम प्रथम। कू भाग लगावे।। निकले शकल जो चक्र में पावे। तो नहिं कर्म खोल को कीजे। ताहि न तैसे तीजी लीजे।। दारिवल शकल उन घरमें आवे। तो व्हाँ द्रव्य गड़ा। बतलावे।। सोलह नुक्ते खुले जो देखे। आवी रेखा शकल जो पेखे।। बाँटे चार दिशा करे न्यारी। फेंके पासा चतुर विचारी।। चौथे शकल जो बैठे आई। वाही

दिशामुखतुमकविगाई ॥ ६१ ॥

दोहा

प्रच्छक पूँछे आयके प्रश्न कहो कविआय।
पक्षीके कुछ जरबमहै तुर्तहिदेयबताय१२५॥

चौपाई

अष्टमद्वादशघरमेंदेखे। ∴ कानकटावह पक्षी
पेखे ॥ ∴ ∴ ∴ ∴ ∴ २१५।१५।१२। जोइनघ-
रमें शाकलये आवे। जरबम निशान पशूके पावे॥
हुमरा जरबमरावेकविलोई। कबजुलखारिजया
घरसोई ॥ उतबेतुलखारिज पुराणा कहिये। दम्मा
आदि व्याधि कहलहिये। अष्टम घरमें शाकल जो।
देखे। बातकरारकवीश्वर पेखे ॥ जेतीजगह कहे
तकरारा। वेतीसंख्या कहे कविभारा॥ जोहुमरा चौ-
थे घरहोई। घरमेंजंगा करेहै सोई ॥ पहिले घरमें हुम-
राहोई। चिराशीशवाको कविलोई ॥ याकोइ उसके
जरबम बतावे। निश्चय घाव कवीश्वर गावे ॥ ∴ ∴
जोये घरमेंचौथे आवे। घरमें बंदर रूपबतावे॥ ∴ ∴
जोये शाकलवेद घर आवे। पूजा ठाकुर करता पावे॥
यामास्टूकके पासबतावे। देता लेता उसको पावे ॥

श्रौर कुवाँ घरके मध्य कहिये। पानी मीठा वाको लहिये॥ जो तकरार श्रातिस घर करे। पनिया खारा वाको भरे॥ जो तकरार श्रष्टम घर करे। श्रावे बास पानी श्रनिसरे॥ जो श्रष्टम में करे तकरारी। पानी पीवे होय बिमारी॥ ⁝ लोक भवन में जोये श्रावे। नंगो पड़े दो। रनकू पावे॥ जो इनकी सवेद घर होई। घरमें साँपक होकविलोई॥ द्वादश घरों करे तकरारा। मारा साँप कहै कवि भारा॥ जो उकलाहि वेद घर होई। चूहे घर में कहे कवि लोई॥ मुसलमान पूँछे कविमिन्ता। घर में कबर कहो निश्चिन्ता॥ ⁝ ⁝ जोये शकल वेद घर श्रावे। काबूतर या मुर्गी पावे॥ ⁝ ⁝ जोये शकल वेद घर श्रावे। फूल पड़े वा घरमें पावे॥ याकहि द्रुम भ बाँधकर राखे। याबुलबुल को शोक जो राखे॥ ⁝ ⁝ जोये भवन वेद में श्रावे। बकरी घरमें निश्चय पावे॥ या महाल घरमें कोइ होई। यमना चार्य्य कहे मत सोई॥ ⁝ ⁝ ⁝ इन घरमें ये शकल जो श्रावे। या सावत कहिं नेक जो पावे॥ दाखिल काज़द हुक्म जो राखे। नासर खारिज का कवि भाखे॥ यामें लिखवा सांच कर जानो। महत किताब कायो मत मानो॥

आगे अक्षर लिखूंबनाई। जासे अगाढ नाम होजाई॥ ६१॥

दोहा

अक्षर लिखूंसोसूनिये यामें झूंठ न होय ।
जो आवे सो समझमें नाम कहो तुमसोय १२६

चौपाई

क्रिया कहूं सोउरसें लीजे। दुसरी पांचवीं को कवि लीजे॥ तीसरी चौथी को पुनि लेहो। दशवीं पांचवीं को कवि देहो॥ छठीं सोलहवीं को अब लेहो। सातवीं और आठवीं देहो॥ और आठवीं को तुम मानो॥ और बारहवीं नवीं बखानो॥ पुनि एकादश द्वादश लेहो। त्रयोदश और चतुर्दश देहो॥ पंद्रह और सोलहवीं जानो। याका भेद इसी में मानों॥ अक्षर काढ़ नाम कहदीजे। बड़े ग्रंथका यों मत लीजे॥ ६२॥

दोहा

विद्यारमल अन्दपहै को कर सकत बखान।
हानि लाभ जीवन मरण या में लीजो जान १२७॥
जो चिंतानि तसेती पढ़े ज्योतिष रमल विचार।
धन दौलत बहुती बढ़े फेंके पांसा सार॥१२८॥

चौपाई

शकलोंके सब भेद बखाने। परिडत चतुर सभी पहिचाने॥ किया ब्यान सब न्यारा न्यारा। लिखा भेद सब ही संसारा। बर्गी चक्र लिख भेद बनाऊं। शकल अंक इसमें जतलाऊं॥ ६३॥

अथ वर्गी यंत्र उदाहरण

लिख्यते

रे. रा २। ४ ॥	का. जा १० : ३ ॥	खा. दे ८ . २	फे. च ८ . १
ख हे ६। ८	से जे ५। ७	ते वा ४। ६	फे दा ८। १
जे ला ९। ३	च का ५। ७	ज्वा रा १३। १०	से ज्ये ७ . ८
पे न ७	सी. ६	नू. ५	मीम ४
जु बु ४	क बु ३	क च २	ल च ७
तु ह ८	बु ड. ७	उ ३	फ च ५
बु १२	खु उ ११	नु च १०	बु बु ४
न १६	३बु १५	उ च १४	उ न १३

अथ त्रयोदशादि षोड़शपर्य्यन्त निर्णय

लिख्यते

दोहा

प्रथम भवन से विश्वलों फल देखो सो होय।
पिछले चारों भुवन हीं मिले आदि में सोय १२८

श्लोक

३ विलाभ ११ दृष्टी स्तवीत संज्ञा। ९ नवमें युदृष्टी खमलीस संज्ञा॥ दशा १० थ ४ दृष्टी स्तरवीस संज्ञा मुकाबला ७ सप्तमदृष्टि दक्षा॥१॥

अथ दृष्टिचक्र

लिख्यते

शुभ दृष्टि ३	शुभ ५	शुभ ९	शुभ ११
ऊर्ध्व शत्रु ४	ऊर्ध्व शत्रु	पूर्ण शत्रु	..
नजीक दृष्ट २	नजीक दृष्ट ६	दूर दृष्ट १०	..
शत्रु अ	स्थ न ८	जागो १२	..

दोहा

पञ्चमभवन सो देखिये द्वादशघरको भाव।
पिछलाबीतासबकहो कहेरमलयोस्वभाव१३०
नातमातुअरुपुत्रको निजआत्माकोदेख।
लाभहानिअरुरोगकूं भिन्नभवनसेपेख१३१
सकलभवनबलदेखिये सोमैंलिखाबिचार
यंत्रदेखनिश्चयकरो कूबतमदननिहार१३२

अथकूबतयंत्र

⁞	⁞	⁞	⁞	⁞	⁞	⁞	⁞	⁞	⁞	⁞	⁞	⁞	⁞	⁞	⁞
१	१	३	४	१	६	७	८	२	१	१४	८	१०	१४	१५	२
२	२	६	३	२	५	५	१०	५	५	११	८	५	१२	६	३
४	१५	८	६	३	१०	८	३	३	९	६	६	७	३	१	४
६	९	१२	१६	९	१२	१३	७	..	६	५	१२	६	५	११	१६
८	५	..	१३	..	११	२	६	..	१०	१२	..	१३	२	..	..
..	११	..	१	..	१४	१२	१	.	..	..	..	..	..	..	..
.	.	.	.	.	.	.	१	.	.	.	.	.	.	.	.

अथनामसंज्ञालिख्यते

दोहा

प्रथमभवन उत्तादहै दूजे मायल जान ॥

तीजे जायलही कहो याक्रम राकलबखान१३३
नामहिं संज्ञा यंत्रयो लिखवू खूब विचार।
आगे सबपढ़ देखियो इसमें खूब प्रचार॥१३४॥

यंत्रलिख्यते

उत्तर	मायल	जायल	० ०
१	२	३	१०
५	५	६	१०
११	११	१२	१०

दोहा

तनधनसहजसुहृदकूं नामकहै उमहात।
सुतरिपुजायामृत्युकोभायतसकलबनात१३५
नवमदशमएकादशौ द्वादश घरपहिचान
सुत्वाल्लदात संज्ञाकहैं कविता आपबखान १३६
त्रयोदशऔरचतुर्दशौ निधिषोड़श घरलाग

संज्ञानामबतातहैं रमलाचार्य्यकोभाय२३७॥

अथश्वातसीबादीआदीखाकी

प्रकृतिलिख्यते

चौपाई

जहांश्वातसीशकलबिचारो। धातरूपहियमहँकदि धारो॥ जोबादीपावेकविमीता। कहोबनासपतीम-नचीता॥ जोबादीपावोतुमलोई। संज्ञाजीवबतावो सोई॥ खाकीशकलकहींजोआवे। पृथ्वीकीसबजिन-सबतावे॥ ६३॥

दोहा

इनकोनिश्चयजोकरे मूकप्रश्नकविगाय।
रमलाचार्य्यकोमतकहै सुनउरधरोकवितायश्८

अथयमनाचार्य्यमतवर्मक्रियाघतकला बनामुहूर्त

दोहा

हमलसमयआवेतसी पांसाफेंकसुजान।
मूलजायचागरिवरे जाकोसबैबिधान२३९॥

चौपाई

तनअरुविश्वसकलकविलेहो। जासोंशकलनिका

लकै देहो॥ वेद चतुर्दश कूं तुम लीजे। तासों शकल नि-
कालकै कीजे॥ पुनि सप्तम और तिथ कूं लेहो। द्विगुण
षोड़श से पुनि देहो॥ यादि क्रिया सों शकल ये लेही।
चारों षष्यम याह कर देही॥ ६४॥

दोहा

चारों षष्यम बनायके नाम धरो उमहात ।
जासों कीजे नायचा पहर कहो दिनरात ९४॥

चौपाई

जासों सकल हवाल बतावो। जोहो रूप प्रकृति ज-
तलावो॥ इसी क्रिया से पुनि पुनि कीजे। पंद्रह दिन गि-
नकर कहि दीजे॥ शुद्ध जायचा तासे होई। योंवी मह-
तकबों मत्त लोई॥ ६५॥

८ अष्टम घरसों देखे दूसरे में वर होय आठवें में थि-
र होय तो करज से छुट जायगा सम और वर दूसरे में थि-
र होय तो चौथे में वर होय तो नहीं छूटेगा जो यों पूछे
मैं करज दूं सुझको नफा होगा या नहीं तब दूसरे आठ
वें को जरब करे शकल निकाले जो शुभ स्थिर होय तो
नफा होयगा जो स्थिर अशुभ होय तो जमा जायगी

जोस्थिर होयतोथोड़ा मिलेदुस्वभावहोयतो द्विविधा कहिये॥ मंत्र॥ ओंनमोभगवती कूष्मांडनी सर्वनिमित्तप्रकाशनी एह्यहि त्वरवरदे वरदे हिलहिलमातंगिनि तत्वं बूहि बूहि स्वाहा॥

अथकेरलप्रश्नविद्या

लिख्यते

भूतंभविष्यति प्रश्नं विज्ञानंज्योतिषांकृतं। स्वायुप्रश्नंमिदंग्रंथं किंचित्तु मतकृतं परं ॥१॥ उच्चरितं फलंनामस्वाद्यक्षर बसेनतु। स्वर्गीद्यष्टकंतेष्टा मायाप्राज्ञैर्विचिन्त्यते॥२॥ प्रश्नाक्षरंतिथियुत। तारकावारमिश्रतं। वन्हिभिश्चहरेद्भागं शेषं सत्वरज स्तमः॥३॥ सत्वे सिद्धिदयाकार्य्यं रजसारज पूजितं। तामसानिष्फलंकार्य्यं इत्येवं प्रश्नलक्षणां॥ ४॥ तेभ्यः फलंकल्पनीयं ध्वजे धूम्रश्च सिंहच श्वानेवृषखरोहस्ती॥ध्वांक्षेचैवाष्टकंतथा शुभाशुभमिदंस्फुटं॥५॥

अथप्रश्ननिर्णय

ध्वजकुंजरसिंहेषु वृषेचास्तीति निश्चितं। धूम्रेश्वानेस्वरेध्वांक्षे नास्तिप्रश्नस्तु निश्चितं॥६॥

अथलाभप्रश्नः

ध्वजेगजेहयेसिंहे शीघ्रलाभोभवेध्रुवं। ध्वांक्षेश्वानेरवरेधूम्रे लाभश्चकलहप्रदा॥७॥

अथधातुमूलजीवप्रश्नं

ध्वजेधूम्रेधातुचिंता गजेसिंहेचमूलकं। श्वानेहयेखरेध्वांक्षे जीवचिंतांभवेदुधः॥८॥

अथसुष्टिज्ञानमाह

ध्वजेपत्रेतुविज्ञेयं धूम्रपुष्पतथैवच:। सिंहेफलंच। विज्ञेयं श्वानेकाष्ठादिकंस्मृतं॥९॥हयेधान्यंतथाघोक्तं खरेहरणानिगद्यते। गजेजीवंचविज्ञेयंध्वांक्षेपुष्पतथास्मृतं॥१०॥

अथधान्यानि

गोधूमान्नं ध्वजेदद्यात् धूम्रेचैवतिलस्तथा। पीतवस्त्रंचसिंहेचश्वानेचैवतुबालकं॥११॥हयेचतंदुलंशेक्तं खरेचचणकंतथा। गजेगुड़घृतंज्ञेयं ध्वांक्षेचयवनंतथा॥१२॥

अथप्रवासीप्रश्न

सिंहेहयेध्वजेचैव गजेचकुशलंवदं। ध्वांक्षेश्वानेखरेधूम्रे नास्तीतिकुशलंवदेत॥१३॥

अथ प्रवासीचरस्थिरप्रश्न

ध्वजेगजेस्थिरंचैव श्वानेसिंहेच चंचलं। हृयेधूम्रेप्रयाणंस्यात् खरेध्वांक्षेच कद्दकं॥२४॥

अथ प्रवासीगमागमौप्रश्नः

ध्वजेधूम्रेसमीपस्थं दूरस्थं गजसिंहयो। हृयेखरेचमार्गस्थं ध्वांक्षेश्वानेपुनर्गतिः॥२५॥

अथ प्रवासी निर्णयः

ध्वांक्षेध्वजेस्वल्पदिनंप्रोक्तं धूम्रे सप्तदिनंतथा। एकविंशतिसिंहेच श्वानेमासंतथैवच॥२६॥ हृयेतुसार्द्धमासंच खरेमासत्रयंतथा। निगदितंपरिडतार्धीशं ध्वांक्षेचत्रयनंतथा॥२७॥

अथ सृष्टिवर्णा ज्ञानं

कौशुभेचध्वजेज्ञेयं धूम्रेश्वेतंतथैवच। लोहितांगंच सिंहेचश्वानेपांडुरनीलकं॥२८॥ पीतवर्णाहृयेज्ञेयं खरेश्रुणवर्णाकं। गजेश्यामंचवर्णास्यात् ध्वांक्षेचमिश्रवर्णाकं॥२९॥

अथ धातुज्ञानम्

ध्वजेसुवर्णाकं ज्ञेयं धूम्रेत्रपुतथैवच। सिंहेताम्रंच विज्ञेयं श्वानेलोहंतथैवच॥३०॥ हृयेकांस्यंखरेनागं

कथितंच गजेच्चतं। ध्वांक्षेपित्तल विज्ञेयं कथितं गरा
कोत्तमैः॥२१॥

अथभूषणा ज्ञानम

ध्वजेश्वाभूषणांसुद्री सुरवेभूषणा धूम्रके। कराटस्य
भूषणांसिंहे श्वाने कर्णायोस्तथा॥२२॥ वृषेहस्तस्च
विज्ञेया अंगुलीभूषणांकरे। गजेचकटिसूत्रंच ध्वां-
क्षेपादादिकंतथा॥२३॥

अथनष्टलाभा

ध्वजेगजेवृषेसिंहे गतलाभंसुनिश्चितं। ध्वांक्षेधूम्रे
खरे श्वाने नष्टहानिसुनिश्चितं॥२४॥

अथदिक्षुनष्टवस्तुज्ञानम

ध्वजेपूर्वगतंचैव सिंहेच दक्षिरोदच। श्वानेनैऋ-
त्यमेवास्तुपश्चिमे वृषभंतथा२५॥ वायव्यांखरमे।
तश्चोक्तं उत्तरेकुञ्जरेज्ञेयः ईशाने ध्वांक्षमेवच ॥२६॥

अथचौरजातिमाह

ध्वजेचब्राह्मणाश्चैव धूम्रेक्षत्रीतथैवच। सिंहेवैश्य-
स्तुविज्ञेयं श्वाने शूद्रतथैवच॥२७॥ वृषेभाराक्त
विज्ञेयं खरेचसेवकंतथा। गजेदासीतु विज्ञेया ध्वां-
क्षेनापिकरंजिकौ॥२८॥

दोहा

केरलविद्याप्रश्नमें सूर्य्य प्रकाश समान।
पढ़ै सोपरिडतहोतहै कोकरसकतबखान १४१

अथनष्टस्थानगतज्ञानंमाह

उष्ट्रेचध्वजेनष्टं धूम्रेऽग्निगृहेतथा। गतसिंहे।
श्वरोयच्च श्वानं स्थानं तथैच ॥ २९ ॥ हृये भांड।
गतेचैव कष्टसितत्तरेश्वरे। गजेनष्टगृहेचैव श्वां-
क्षे बिसुक्षिताकर्यं ॥३०॥

अथदेवपूजा

ध्वजेभूयशा पूजास्यात धूम्रेचगजदविके। सिंहेच
सूर्य्यभक्तिस्यात श्वानेबायुसुतस्तथा ॥३१॥
वृषेरुद्रगणाश्चैव खरेबागीश्वरी तथा। गणेशा-
श्चगजेचैव श्वांक्षेपित्तृपूजनं ॥ ३२ ॥

अथकन्यापुत्रप्रश्न

ध्वजेगजेहृयेसिंहे गर्भिणीपुत्रसंदिसेत। धूम्रेश्वा-
नेश्वरे श्वांक्षे कन्याजन्म विनिर्दिसेत ३३॥

अथआयुबिचार

ध्वजेसिंहे शतंप्रोक्तं श्वांक्षेषोड़शमिस्तथा। हृयेचैव
द्विवर्षाणि खरे व्योमाब्धिसंज्ञकां ३४ ॥ श्वानेच।

विंसतिप्रोक्तं गजेव्योम यतिस्तथा। धूम्रेवर्षमिदं ज्ञेयं मित्यायुश्च विचिन्तयेत॥३५॥

अथशत्रुगमागमप्रश्न

ध्वजेगजेवृषेसिंहे शत्रूणां शीघ्रमागमः। श्वाने स्वरेतथा धूम्रे ध्वांक्षेचपुनरागमः॥३६॥

स्थायिजायजयप्रश्न

गजेध्वजेवृषेसिंहे स्थायि नोजय संभवः। श्वस्वरेश्वानेतथा धूम्रे ध्वांक्षेचजयजादुनः॥३७॥

अथ वृष्टीप्रश्नः

धूम्रेगजेवृषेश्वाने वृष्टिरभवतिद्योत्तमा। सिंहे ध्वजेविलम्बेन ध्वांक्षेस्वरेनवृष्टियः॥३८॥

अथदिनानि

धूम्रेसप्तदिनप्रोक्तं वृषेदशातथैवचः। श्वानेचविंशतिज्ञेया ध्वजेचसप्तविंशति॥३९॥ सिंहेगजेचव्यासादि स्वरेध्वांक्षेरितस्तथा। वर्षाकालाचविज्ञेयं कथितंगर्गाकोत्तमैः॥४०॥

अथगर्भनक्षत्र

अश्वनी आदिदशकं नक्षत्रंगर्भसंज्ञकं। तस्मात्संचनक्षत्रं गर्भपातस्यचिंत्यवेत॥४१॥ गर्भ

अथ प्रवासीचरस्थिरप्रश्न

ध्वजेगजेस्थिरंचैव श्वानेसिंहेच चंचलं। वृषेधूम्रेप्रयाणंस्यात् खरेध्वांक्षेच कण्टकं॥१४॥

अथ प्रवासीगमागमौ प्रश्नः

ध्वजेधूम्रेसमीपस्थं दूरस्थंगजसिंहयो। वृषेखरेचमार्गस्थं ध्वांक्षेश्वानेपुनर्गतिः॥१५॥

अथ प्रवासी निर्गात्रः

ध्वांक्षेध्वजेस्वल्पदिनंप्रोक्तं धूम्रे सप्तदिनंतथा। एकविंशतिसिंहेच श्वानेमासंतथैवच॥१६॥ वृषेतुसार्द्धमासंच खरेमासद्वयंतथा। निगदितंपरिज्ञाताधीशं ध्वांक्षेच त्रयनंतथा॥१७॥

अथ सृष्टिवर्णा ज्ञानं

कौशुभेच ध्वजेज्ञेयं धूम्रे श्वेतंतथैवच। लोहितांगंच सिंहेच श्वानेपांडुरनीलकं॥१८॥ पीतवर्णोवृषेज्ञेयं खरेत्वरुणवर्णकं। गजेश्यामंचवर्णास्यात् ध्वांक्षेच मिश्रवर्णकं॥१९॥

अथ धातुज्ञानम्

ध्वजेसुवर्णाकं ज्ञेयं धूम्रेत्रपुतथैवच। सिंहेताम्रंच विज्ञेयं श्वानेलोहंतथैवच॥२०॥ वृषेकांस्यंखरेनागं

कथितंच गजेज्ञतं। ध्वांक्षेपित्तल विज्ञेयं काथितं गरा कोत्तमैः॥२१॥

अथभूषणज्ञानम्

ध्वजेश्वाभूषणांसुद्री सुखेभूषणा धूम्रके। कराटस्य भूषणांसिंहे श्वानेकर्णायोस्तथा॥२२॥ हृयेहस्तस्च विज्ञेया अंगुलीभूषणांकरे। गजेचकटिसूत्रंच ध्वांक्षे पादादिकंतथा॥२३॥

अथनष्टलाभा

ध्वजेगजेहयेसिंहे गतलाभंसुनिश्चितं। ध्वांक्षेधूम्रे खरे श्वाने नष्टहानिसुनिश्चितं॥२४॥

अथदिक्षुनष्टवस्तुज्ञानम्

ध्वजेपूर्वगतंचैव सिंहेच दक्षिणोवच। श्वानेनैऋत्यमेवास्तुपश्चिमे हयमंतथा२५॥ वायव्यांखरमे। तश्चोक्तं उत्तरेकुञ्जरेज्ञेयः ईशाने ध्वांक्षमेवच॥२६॥

अथचौरजातिमाह

ध्वजेचब्राह्मणश्चैव धूम्रेक्षत्रीतथैवच। सिंहेवैश्यस्तुविज्ञेयं श्वानेशूद्रतथैवच॥२७॥ हृयेभाराकं विज्ञेयं खरेचसेवकंतथा। गजेदासीतुविज्ञेया ध्वांक्षेनापिकरंजिकौ॥२८॥

दोहा

केरलविद्याप्रश्नमें सूर्य्य प्रकाश समान।
पढ़ै सोपरिडतहोतहै कोकरसकतबयान १४१

अथनष्टस्थानगतज्ञानंमाह

उष्ट्रेचध्वजेनष्टं धूम्रेऽग्निगृहेतथा। गतसिंहे।
श्वरोयच्च श्वानि स्थानं तथैच ॥ २९ ॥ वृषे भांड।
गतेचैव कष्टसितत्वरेश्वरे। गजेनष्टगृहेचैव श्वां-
क्षे बिसुक्षिताकर्यं ॥३०॥

अथदेवपूजा

ध्वजेभूयशा पूजास्यात धूम्रेच गजदविके। सिंहेच
सूर्य्यभक्तिस्यात श्वानेबायुसुतस्तथा ॥३१॥
वृषेरुद्रगणाश्चैव स्वरेबागीश्वरी तथा। गणेशा-
श्चगजेचैव श्वांक्षेपित्तृपूजनं ॥ ३२ ॥

अथकन्यापुत्रप्रश्न

ध्वजे गजेवृषेसिंहे गर्भिणीपुत्रसंदिसेत। धूम्रेश्वा-
नेस्वरेश्वांक्षे कन्याजन्म विनिर्दिसेत ३३॥

अथआयुविचार

ध्वजेसिंहे शतंप्रोक्तं श्वांक्षेषोड़शभिस्तथा। वृषेचैव
द्विवर्षाणि स्वरे व्योमाब्धिसंज्ञकां ३४ ॥ श्वानेच।

विंसतिप्रोक्तं गजेव्योम यतिस्तथा। धूम्रेवर्षमिदं ज्ञेयं मित्यायुश्च विचिन्तयेत॥३५॥

अथशत्रुगमागमप्रश्न

ध्वजेगजेवृषेसिंहे शत्रूणां शीघ्रमागमः। श्वानेखरेतथाधूम्रे ध्वांक्षेचपुनरागमः॥३६॥

स्थायिजायजयप्रश्न

गजेध्वजेवृषेसिंहे स्थायि नोजय संभवः। श्वखरेश्वानेतथाधूम्रे ध्वांक्षेचजयजादुनः॥३७॥

अथवृष्टीप्रश्नः

धूम्रेगजेवृषेश्वाने वृष्टिरभवतिद्योत्तमा। सिंहेध्वजेविलम्बेन ध्वांक्षेखरेनवृष्टियः॥३८॥

अथदिनानि

धूम्रेसप्तदिनप्रोक्तं वृषेदशातथैवचः। श्वानेचविंशतिज्ञेया ध्वजेचसप्तविंशति॥३९॥ सिंहेगजेचव्यासादि खरेध्वांक्षेरितस्तथा। वर्षाकालाचविज्ञेयं कथितंगर्गकोत्तमैः॥४०॥

अथगर्भनक्षत्र

अश्वनीआदिदशकं नक्षत्रंगर्भसंज्ञकं। तस्मात्संचनक्षत्रं गर्भपातस्यचिंत्ययेत॥४१॥ गर्भ

पातोयथा वृष्टि हानिर्भवति निश्चितं। गर्भवृष्टि तथा वृष्टि तथा भवति चोत्तमा ॥४२॥

अथ स्त्रीलाभप्रश्नः

ध्वजेगजेसिंह वृषेचलाभो जयासुशीलाचस्वरूपिताच। श्वानेखरे ध्वांक्षेच धूम्रकेच कार्यस्यहानिः कलहस्तथैव॥४३॥

अथव्यवहारप्रश्नः

ध्वजेगजे वृषेसिंहे व्यवहारशुभप्रदा। ध्वांक्षेश्वानेखरेधूम्रे कलहस्तशुभप्रदा॥४४॥

अथनष्टप्रश्नः

ध्वजेकुंजरसिंहेच वृषेचकलहप्रदा। ध्वांक्षेधूम्रे। खरेश्वानेनष्टंनदृष्टं निश्चितं॥४५॥

अथजातराज्यपाप्तिप्रश्नः

गजेध्वजेनिरः प्राप्ति वृषेसिंहेचशीघ्रताः। श्वाने खरेतरः प्राति कलहं भ्रातृजैः सहः॥ भोगा विचारेणा कथित सूक्ष्म दृष्टिभिःसहः॥४६॥

अथअंधकारप्रश्नः

ध्वजे गजे विरः प्राप्ति वृषेसिंहेचशीघ्रता। कल

हस्त्वरवरे श्वाने नास्तीभि ध्वांक्ष धूम्रके॥४७॥

अथग्रामप्राप्तिप्रश्नः

ध्वजेगजे वृषेसिंहे ग्रामप्राप्तिश्च निश्चितं। श्वाने। खरे तथा ध्वांक्षे धूम्रे नास्तीति निश्चितं॥४८॥

अथबन्दीमोक्षप्रश्नः

धूम्रेश्वानेखरे ध्वांक्षे बन्दि शीघ्रं प्रमुच्यते। वृषे। ध्वजेगजेसिंहे बन्दीकष्टेन मुच्यते॥४९॥

अथकालनिर्णयः

गजेध्वजेस्थिरं कार्यं त्वरितं वृषसिंहयोः। दीर्घकालंखरेश्वाने ध्वांक्षे धूम्रे प्रसिद्धतः॥५०॥ पुनः। ध्वजेसप्तदिनं कार्यं। सिंहेपक्षतथैवच। वृषेमासश्च विज्ञेया गजेमासत्रियंतथा॥५१॥ श्वानेखरेचयत्रा मासे धूम्रे ध्वांक्षेच वर्षकं। एकंकालं वदेत् प्रश्नं सर्वकर्मागिाचिंतयेत्॥५२॥ प्रश्नअक्षरमिदं ग्रंथं विघ्नराजेन निर्मितं। चांगदेशेमिमांभक्त स्त्वत्प्रसादात्करोम्यहं॥५३॥

अथकेरलकाचक्रलिख्यते

धू	मं	सु	बु	वृ	शु	चं	चं	स्वामी
ध्व	धू	सिं	स्वा	वृ	ख	ग	ध्वां	श्वानु

मंत्र

ओंनमो चंडी चामुंडी दत्तये हाररणी सर्व शत्रु विना
शनी जभे नित्यम्भे नित्यम्भनी मोहनी राज प्रजावशि
कारणि ॥

नामके वरणि जो दशगुणो करदीजिये ॥१०॥७०॥ चं-
द्रयुत भरन ताह दूने करदीजिये ॥१४२॥ वेद गुणा
५ई८ शिवआनन मोहत २८४ वाह सरसों काट १५ ४
शेषएक ठौर कीजिये नागसौ निधन

१२० अङ्ककलमेंजोप-
र्म आप के गणापत
सों अशीश
लीजिये

दवाई धुन्धजाला आँखके अन्धेकी
चमेली की कली ८ ई ॥ तिलके फूल ८ ६ ॥ मिर
चकाली १६ ॥ तिनको पीस गोली बांध घिसकर १॥

इतिश्रीरमल शास्त्रे चौरकेरल समाप्तम्

शुभम्

दिशा शूल देखनेका झुलना

शनीचर औरसुम्वार पूरब मतना जाइये ॥ यार।

नातरडूबेगासमझ धार बात साँची करके जानिये ॥
बुधऔर मंगल उत्तर जाय होय दंगल मैया औरबातें
छोड़दिशाशूल को पहिचानिये ॥ जुम्मा येतवार प-
श्चिममतनाहोसवारचाहेहोय नरनारखैरअ-
पनीमतमानिये ॥ हरदेव आधीन जुमे
रातका येकीन दक्षिणाजाय मान
छिनकिया ज्योतिषसेबखानये१

समाप्तम

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
अनेकार्थ	किस्सा गुलसनोबर	कृष्णगीतावली	कायस्थधर्मोनिरूपण
छन्दोर्णवपिंगल	सहस्ररजनीचरित्र	मोदागरलीला	तथा छोटा
कविकुलकल्पतरु	रविन्सन्काद्भुतिहास	श्रीअनुरागरस	मथुरासभा
रसराज	सीताहरण	दूसरी	भाषातत्व प्रकाश
सत्सई मूलतथास	सतीविलास	अक्षरावली	ज्योतिष
सभाविलास	मुनफ़र्क़ात	स्वयम्बोध	मुहूर्त्तगणपति
तुलसीशब्दार्थप्र-	शनिश्चरकी कथा	ज्ञानचालीसी	मुहूर्त्तचक्रदीपिका
भजनावली	ज्ञानमाला	दोहावली	मुहूर्त्तचिन्तामणिस-
प्रेमरत्न	गोपीचंद भरतरी	बालाबोध	मुहूर्त्तमार्त्तण्डस-
युगलविलास	कथाश्रीगंगाजी	विद्यार्थीकीप्रथम पु-	मुहूर्त्तदीपक
चित्रचन्द्रिका	अवधयात्रा	किताबमंत्री	सहस्रज्ञानकसटीक
आदिमालाबलदेवज	भरतरीगीत	गणितकामधेनु	जातकालंकार
मनोहरलहरी	दानलीलावनगालीला	स्त्रीलावती	जातकाभरण
गंगालहरी	दोहावली रत्नावली	पत्वारियोंकीपु-ब्भा	होरामकरन्द
यमुनालहरी	गोकर्णमाहात्म्य	वैद्यकभाषा	संस्कृतउर्दूटी-स-
जगद्विनोद	श्रीगोपालसहस्रनाम	निघण्टु	मनुस्मृति
शृंगारबत्तीसी	कथासत्यनारायणस-	अमरविनोद	विष्णुहारीत
किस्सा वगैरह	हनुमानबाहुक	वैद्यजीवन	महिम्नस्तोत्र
नानार्थनोसंग्रहावली	जनकपच्चीसी	औषधिसंग्रहकल्प-	बृहन्नार्क
ब्रह्मसार	हरिहरसगुणनिर्गुण	वल्ली	याज्ञवल्क्यस्मृति
शिवसिंहसरोज	पदावली	अमृतसागरबड़ावली	संस्कृतभाषादी-
भक्तमाल	बनयात्रा	वैद्यमनोत्सव	अमरकोषतीकौकोस-
कृष्णसभा	कायस्थवंशनिर्णय	संस्कृतकी पुस्तकें	याज्ञवल्क्यस्मृति
विक्रमविलास	विहारवृन्दावन	लघुकौमुदी	सन्ध्यापद्धति
वेतालपच्चीसी	समरविहारवृन्दावन	सिद्धान्तचन्द्रिका	व्रतार्क
सिंहासनबत्तीसी	कल्पभाष्य	अपराधभञ्जनस्तोत्र	भगवद्गीताटी-हृ-वं-
पद्मावतीखंड	भाषाविष्णुपुराण	पंचमहायज्ञ	भगवद्गीताटी-श्रीधि-
शुकबहत्तरी	लिंगपुराण	निर्णयसिन्धु	गीतगोविंद
बकावली सुमन	ब्रह्मोत्तरखण्ड	संग्रहशिरोमणि	कथासत्यनारायण
ब्रह्मरदरवेश	सृष्टिवंशच-	भगवद्गीतासटीक	परमार्थसार
किस्सा ज्ञातमताई	न्द्रोदय	दुर्गापाठमूलतथास-	पाराशरसंहिता
अपूर्वकथा	सुदामाचरित्र	कायस्थकुलभास्कर	पाराशरीसटीक

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
शीघ्रबोध सटीक	भाषालघुव्याकरण	सुन्दरकाण्ड	लगान १८ सन्
लघुजातक	१ भाग तथा २	लंकाकाण्ड	१८६८ ई॰सवी
षट्पञ्चाशिका	भाषातत्वदीपिका	उत्तरकाण्ड	पुरत्रादारी २६सन्
सामुद्रिक	भाषाचन्द्रोदय	गुटका १भा॰२व३	१८६६ ई॰सवी
गरुड़पुराण	भूगोलतत्व	हिदायतनामामुदर्रिसान	रेक स्टाम्प दस्ता॰
रामविवाहोत्सव	भूगोलदर्पण	पशुचिकित्सा	वेजात सन् १८६६
संस्कृत पुस्तकें	दृतिहासतिमिरनाश	पट्टाबरबत कैथी	ई॰सवी
	क १भाग २व३भा॰	तथाक्रबूलियत	रेकताल्लुक़दारान्
	अवधदेशीयभूगोल	रजिस्टरदारिल्ल खा॰	सक़रूज़ अवध २४
ऋजुपाठ १भा॰२व३	बुंदिलखानकाइतिहा॰	रिज नुलत्वा मदर्सा	सन् १८७१ ई॰
धात्वर्णव	हितोपदेशिका	रजिस्टरहाजिरीपाठशा॰	रेक चौपायों का
नागरी कैथी	बालाभूषण	क़ानून कैथी	मदाख़ल बेना १
वर्णमाला कैथी १भा॰	पद्यसंग्रह	पटवारियों के क़ायदे	सन् १८७१ ई॰
व २भाग	भाषाकाव्यसंग्रह	दर्दू कैथी महाजनी	रेक मजमूआज़ा॰
तथा कैथी फारसी	कवित्तरत्नाकर १भा॰	दिकट के लादू सन्त	बिता फ़ौजदारी १०
नागरी	तथा २भाग	का रेक २ सन् १८७८	सन् १८७२ ई॰
हरूफ़सुफ़ेद	मंगलकोष	ई॰सवी	रेक माल गुज़ारी
अक्षरारम्भ	अंकप्रकाश	नागरी	मग़रबी वशिमा॰
वर्णप्रकाशिका १भा॰	गणितप्रकाश १भा॰	रेक लगान मग़रबी	ली १८ सन् १८७३
तथा २भाग	तथा २भाग ३व४	वशिमाली १० सन्	ई॰सवी
सूर्य्यपुरकीकहानी	गणितक्रिया	१८५८ ई॰	तरमीम मजमूआ
धर्म्मसिंहका वृत्तांत	क्षेत्रप्रकाश	इंडियन पिनल कोड	ज़ाबिता फ़ौजदारी
शिक्षावली	क्षेत्रचन्द्रिका २भा॰	मजमूआज़ाबिता फ़ौ॰	१९ सन् १८७४ ई॰
शिशुबोध	सकीलदायरा	जदारी रेक २५ सन्	सवी
पत्रलिखनेविधि	रेखागणित १भाग	१८६१ ई॰	तक़ावी के क़ायदे
पत्रदीपिका	तथा २भाग	रेक रजिस्टरी २० स॰	सवाल व जवाब
विद्याचक्र	बीजगणित १भाग	न् १८६६ ई॰	पुलिस
विद्यांकुर	रामायण तुलसीकृ॰	रेक स्टाम्प १ सन्	अवध रुहेल खं॰
पदार्थविद्यासार	बालकाण्ड	१८६२ ई॰	ड रेलवे का इस्तू॰
पदार्थज्ञानदिवाकर	अयोध्याकाण्ड	रेक स्टाम्प अदालत	रुल अमल
भोजप्रबन्धसार	आरण्यकाण्ड	२६ सन् १८६७ ई॰	दूति
राजनीति	किष्किन्धाकाण्ड	मजमूआ रेक अवध	